इजरायल को मान्यता देंगे पाकिस्तान... पेज 5

दैनिक

कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

हरिद्वार से काशी तक आस्था की डुबकी... पेज 7

वर्ष 6, अंक 344 | भोपाल, मंगलवार 26 मई, 2026 | ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, एकादशी 2083 | मूल्य 2 रुपए

पद्म पुरस्कार 2026 समारोह : पीएम मोदी की मौजूदगी में दिग्गजों को मिला सम्मान

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी नई दिल्ली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोमवार को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक नागरिक अलंकरण समारोह में बॉलीवुड अभिनेता धर्मेंद्र और शास्त्रीय संगीतकार एवं वायलिन वादक एन राजम को मरणोपरांत पद्म विभूषण से सम्मानित किया। कला के क्षेत्र में असाधारण एवं विशिष्ट योगदान के लिए धर्मेंद्र को दिया गया यह पुरस्कार उनकी पत्नी और सांसद हेमा मालिनी ने ग्रहण किया। राजम को भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनके अहम योगदान के लिए, खासकर 'गायकी अंग' शैली के माध्यम से वायलिन प्रस्तुति को नया स्वरूप प्रदान करने के लिए दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया।

राजम ने पंडित ओंकारनाथ ठाकुर से संगीत के गुर सीखे थे। मुर्मू ने उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी; चुनौतियों का सामना कर रहे पारंपरिक भारतीय कला 'अवधान'को पुनर्जीवित करने वाले शतावधानी आर गणेश; कोटक महिंद्रा बैंक के संस्थापक उदय सुरेश कुमार कोटक; और उदर रोग विशेषज्ञ कल्लीपट्टी रामासामी पलानीस्वामी को पद्म भूषण से सम्मानित किया। राष्ट्रपति ने विज्ञापन गुरु पीयूष पांडे और पूर्व सांसद विजय कुमार मल्होत्रा को भी मरणोपरांत इस सम्मान से नवाजा। पांडे की पत्नी और मल्होत्रा के बेटे ने सम्मान प्राप्त किया।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर भुल्लर, अभिनेता प्रोसेनजीत चटर्जी, पैरा एथलीट प्रवीण कुमार और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के पूर्व महानिदेशक के. विजय कुमार को पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रपति भवन के गणतंत्र मंडप में हुए इस समारोह की शुरुआत राष्ट्रगीत वंदे मातरम के गायन से हुई, जिसके बाद राष्ट्रगान 'जन गण मन' गाया गया। कार्यक्रम में उपराष्ट्रपति सी पी राधाकृष्णन, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह समेत कई गणमान्य लोग शामिल हुए।

राष्ट्रपति ने वर्ष 2026 के लिए 131 पद्म पुरस्कार देने की मंजूरी दी है। इनमें पांच पद्म विभूषण, 13 पद्म भूषण और 113 पद्म श्री शामिल हैं। ये पुरस्कार दो अलग-अलग अलंकरण समारोहों में प्रदान किये जाने हैं। पद्म पुरस्कारों की घोषणा हर साल गणतंत्र दिवस के मौके पर की जाती है। ये प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान कला, सामाजिक कार्य, सार्वजनिक मामले, विज्ञान और इंजीनियरिंग, व्यापार और उद्योग, चिकित्सा, साहित्य और शिक्षा, खेल और सिविल सेवा सहित विभिन्न क्षेत्रों में प्रदान किये जाते हैं।

सीबीआई ने त्विषा मामले की जांच अपने हाथ में ली, पति और सास के खिलाफ मामला दर्ज

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने सोमवार को त्विषा शर्मा की मौत के मामले में औपचारिक रूप से प्राथमिकी (FIR) दर्ज कर ली है। जांच एजेंसी ने इस मामले में मृतका के पति समर्थ सिंह और सास गिरिबाला सिंह को आरोपी बनाया है। अधिकारियों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, सीबीआई की एक विशेष अपराध इकाई को जांच का जिम्मा संभालने और आवश्यक दस्तावेज एवं सबूत जुटाने के लिए भोपाल भेजा गया है। मुलाकात और कागजी कार्रवाई के बाद, सीबीआई ने स्थापित प्रक्रिया के तहत राज्य पुलिस की प्राथमिकी को पुनः दर्ज (Re-register) किया। त्विषा (33) का शव 12 मई को भोपाल के कटारा हिल्स इलाके में उनके ससुराल में फंदे से लटका मिला था। उनके परिवार ने ससुराल वालों पर दहेज उत्पीड़न और आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप लगाया है। वहीं त्विषा के ससुराल वालों ने दावा किया कि उसे मादक पदार्थों की लत थी। भारत के प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की की पीठ ने सोमवार को मामले की सुनवाई करते हुए कहा कि वह सुनिश्चित करेगी कि इस मामले की जांच निष्पक्ष, स्वतंत्र और पूर्वाग्रह रहित हो। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं तथा दहेज निषेध अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज की है। प्राथमिकी में त्विषा के पति समर्थ सिंह और उनकी सास एवं पूर्व जिला न्यायाधीश गिरिबाला सिंह को नामजद किया गया है। पीठ ने कहा, ''हम पीड़ित परिवार के सदस्यों के साथ-साथ आरोपियों के परिवार के सदस्यों से भी कहना चाहेंगे कि वे सार्वजनिक रूप से या मीडिया मंचों पर बयान देने के बजाय जांच एजेंसी के समक्ष अपनी बात दर्ज कराएं, ताकि जारी जांच पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े और कोई पूर्वाग्रह नहीं हो।

संघर्ष-विराम टूटा, अमेरिका का बड़ा सैन्य एक्शन, IRGC की जहाजों को किया नेस्तनाबूद

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी नई दिल्ली

एक तरफ जहां क्षेत्र में शांति स्थापित करने और संघर्ष-विराम को बनाए रखने की कोशिशें जारी हैं, वहीं दूसरी तरफ पश्चिम एशिया से एक बड़ी सैन्य कार्रवाई की खबर सामने आई है। अमेरिकी सेना ने सोमवार को दक्षिणी ईरान में इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC) के ठिकानों पर भीषण हमले किए हैं। 'यूएस सेंट्रल कमांड' (CENTCOM) के अनुसार, यह कार्रवाई पूरी तरह "आत्मरक्षा" में की गई है, जिसके तहत रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण होर्मुज जलडमरूमध्य (Strait of Hormuz) के पास ईरानी जहाजों और मिसाइल लॉन्च साइटों को निशाना बनाया गया।

CENTCOM के प्रवक्ता कैप्टन टिम हॉकिन्स ने Fox News को दिए एक बयान में कहा, "अमेरिकी सेना ने आज दक्षिणी ईरान में आत्मरक्षा में हमले किए, ताकि हमारे सैनिकों को ईरानी सेनाओं से होने वाले खतरों से बचाया जा सके।" हॉकिन्स ने बताया कि जिन ठिकानों को निशाना बनाया गया, उनमें मिसाइल लॉन्च साइटें और ईरानी नावें शामिल थीं, जो कथित तौर पर इस रणनीतिक जलमार्ग में बारूदी सुरंगें बिछाने की कोशिश कर रही थीं। उन्होंने आगे कहा, "US सेंट्रल कमांड मौजूदा संघर्ष-विराम के दौरान संयम बरतते हुए भी हमारी सेनाओं की रक्षा करना जारी रखे हुए है।"

एक वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी के अनुसार, होर्मुज जलडमरूमध्य में बारूदी सुरंगें बिछाते हुए ईरानी रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (IRGC) की दो नावें देखी गईं, जिसके बाद सैन्य कार्रवाई की गई। अमेरिकी सेना ने बंदर अब्बास में सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल (SAM) साइट पर भी हमला किया, क्योंकि ऐसी खबरें थीं कि उसने अमेरिकी लड़ाकू विमानों को निशाना बनाया था। अधिकारी ने बताया कि ईरानी जहाज और मिसाइल साइट, दोनों ही "रक्षात्मक हमलों" में नष्ट हो गए। दो अन्य सूत्रों ने Fox News को बताया कि इस कार्रवाई का मतलब ईरान के साथ संघर्ष-विराम का टूटना नहीं है; उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि ये हमले सीमित दायरे में किए गए थे। ये घटनाक्रम ऐसे समय सामने आए हैं, जब सोमवार को होर्मुज जलडमरूमध्य के आसपास के इलाकों में धमाकों की खबरें आईं। ईरानी मीडिया ने बंदर अब्बास में धमाकों की सूचना दी, जबकि दक्षिणी तट पर सीरिक और जास्क के पास भी धमाकों की आवाज़ें सुनी गईं। वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी ने बाद में कहा कि ये हमले "अभी के लिए समाप्त हो गए हैं।"

यह घटनाक्रम ऐसे समय सामने आया है, जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर दोहराया है कि ईरान को अपना संवर्धित यूरेनियम नष्ट करने के लिए अमेरिका को सौंप देना चाहिए। इसके साथ ही, वह 'अब्राहम समझौते' (Abraham Accords) के व्यापक विस्तार पर भी ज़ोर दे रहे हैं, जिसमें भविष्य के क्षेत्रीय शांति ढांचे के हिस्से के तौर पर तेहरान को भी शामिल किया जा सकता है। अपने 'ट्रुथ सोशल' (Truth Social) प्लेटफॉर्म पर एक पोस्ट में, ट्रंप ने ईरान के संवर्धित यूरेनियम को "परमाणु धूल" बताया और कहा कि इसे या तो अमेरिका को सौंप दिया जाना चाहिए, या फिर किसी तय स्थान पर अंतरराष्ट्रीय निगरानी में नष्ट कर दिया जाना चाहिए।

ट्रंप ने लिखा, "संवर्धित यूरेनियम (परमाणु धूल!) को या तो तुरंत अमेरिका को सौंप दिया जाए, ताकि उसे वापस लाकर नष्ट किया जा सके; या फिर—जो कि ज़्यादा बेहतर विकल्प है—ईरान के साथ मिलकर और आपसी तालमेल से, उसे उसी जगह पर या किसी अन्य स्वीकार्य स्थान पर नष्ट कर दिया जाए।"

वहीं, ईरान ने दावा किया है कि उसने होर्मुज जलडमरूमध्य के पास एक दुश्मन ड्रोन को मार गिराया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, यह ड्रोन केश्म द्वीप के हवाई क्षेत्र में ईरान के एयर डिफेंस सिस्टम के जरिए मार गिराया गया। ईरानी फार्स समाचार एजेंसी ने कहा कि इस ड्रोन को सोमवार रात फारस की खाड़ी के ऊपर निष्क्रिय कर दिया गया। अभी तक यह साफ नहीं हो सका है कि इस ड्रोन को कौन ऑपरेट कर रहा था। यह घटना तब सामने आई है, जब अमेरिका और ईरान के बीच शांति समझौते को लेकर बातचीत चल रही है, हालांकि, दोनों देशों ने समझौते के लिए जल्दीबाजी दिखाने से परहेज किया है।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

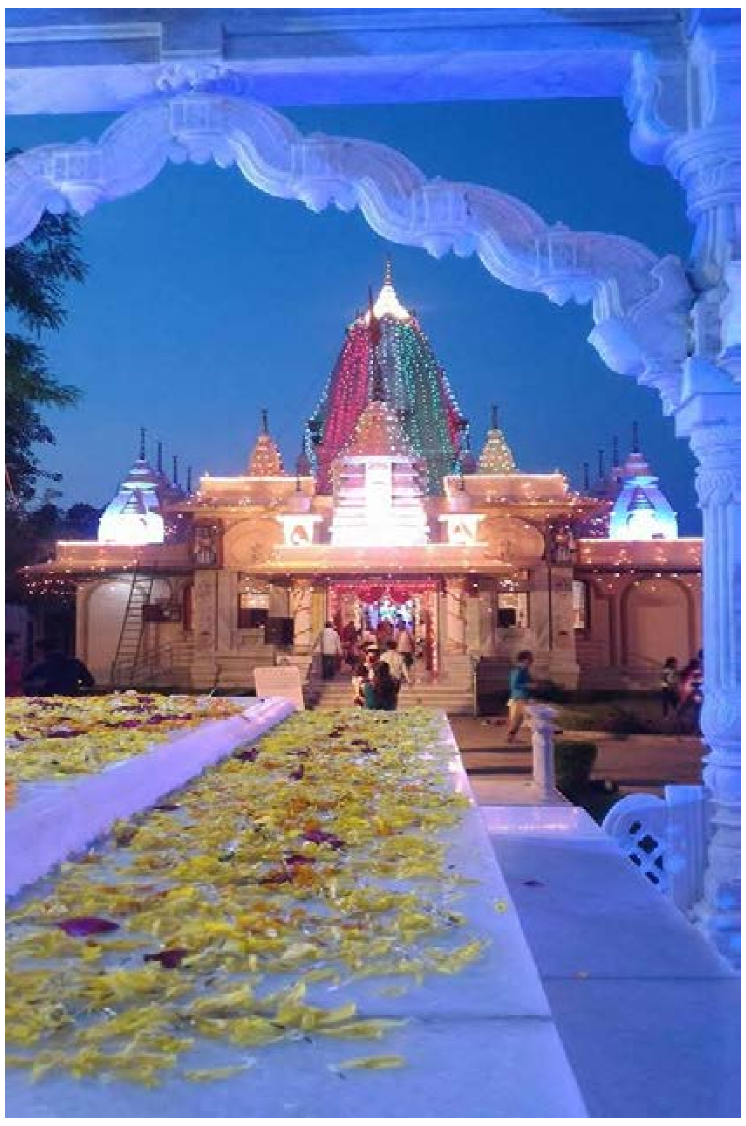

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

दादाजी अनंत उनकी कृपा अनंता... भक्त डॉ. अवधेश सिंह सदैव स्वयं को श्री दादाजी गुरुदेव की अहेतुकी कृपा का पात्र मानते हैं। जीवन के अनेक कठिन क्षणों में दादाजी ने उन्हें संभाला, मार्ग दिखाया और संकटों से उबारा। ऐसी ही एक अत्यंत पीड़ादायक और परीक्षा की घड़ी 17 जुलाई 2016 को उनके जीवन में आई, जिसने उनकी आस्था को और भी दृढ़ कर दिया।

उस दिन प्रातः लगभग 9 बजे उनके पुत्र अर्ष सिंह अपने दो भांजों के साथ कार से बोर्ड ऑफिस चौराहे से हबीबगंज रेलवे स्टेशन की ओर जा रहे थे। उस समय एमपी नगर क्षेत्र में बीआरटीएस लेन हेतु लोहे के डिवाइडर लगाकर मार्ग को वन-वे बनाया गया था। संयोगवश उसी दिन पूज्य जैन मुनि श्री विद्यासागर जी महाराज के चातुर्मास हेतु भोपाल आगमन का कार्यक्रम था। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए नगर निगम एवं यातायात पुलिस द्वारा सरगम टॉकीज के समीप अस्थायी मार्ग बनाया गया था। जैसे ही बच्चों की कार बीआरटीएस बस स्टॉप के पास पहुँची, तभी एक श्वेत रंग की टाटा इंडिगो कार ने तेज गति से उन्हें कट मारा, जिससे उनकी कार असंतुलित होकर बाईं ओर चली गई। बच्चे स्थिति समझ पाते, उससे पहले ही सामने से आ रहे एक मोटरसाइकिल सवार ने अचानक वाहन मोड़ दिया। उसे बचाने के प्रयास में कार सड़क किनारे दीवार से जा टकराई, किन्तु मोटर साइकिल चालक कार की हेडलाइट से टकराकर सड़क पर गिर पड़ा।

दुर्घटना अत्यंत भीषण थी मोटरसाइकिल सवार को सिर एवं पैर में गंभीर चोटें आईं। अर्ष सिंह के सीने और पैरों में चोट लगी तथा अन्य दोनों युवक भी कार का शीशा टूटने से घायल हो गए। दुर्घटना के बाद अफरा-तफरी के बीच कुछ असामाजिक तत्वों ने उनके मोबाइल फोन और कार का सामान भी लूट लिया। कार इतनी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुकी थी कि उसे देखकर किसी के जीवित बचने की संभावना क्षीण प्रतीत होती थी।

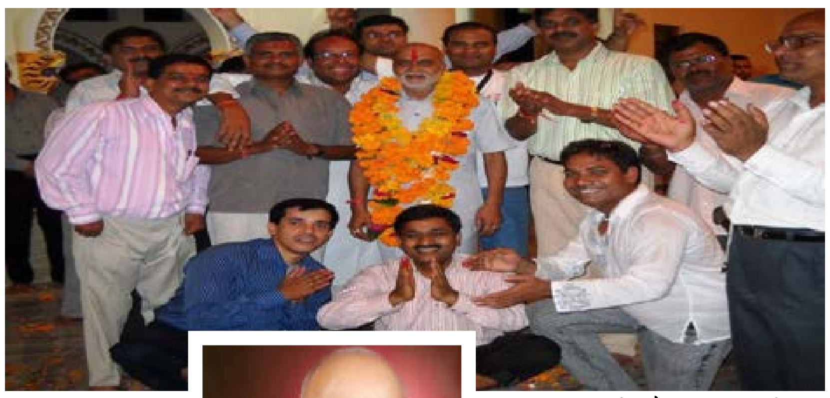

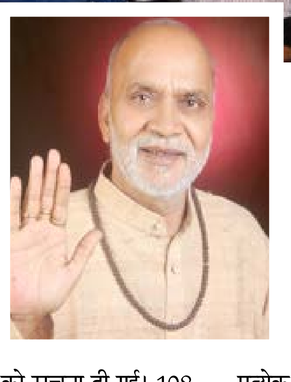

स्थानीय लोगों की सहायता से पुलिस को सूचना दी गई। 108 एम्बुलेंस के माध्यम से सभी घायलों को नर्मदा अस्पताल पहुँचाया गया, जहाँ उनका उपचार कराया गया। डॉ. अवधेश सिंह ने मानवता और करुणा का परिचय देते हुए घायल मोटरसाइकिल चालक के ऑपरेशन और दवाओं सहित लगभग 70 से 80 हजार रुपये का सम्पूर्ण खर्च स्वयं वहन किया। उपचार के बाद वह व्यक्ति स्वस्थ होकर अपने घर लौट गया। किन्तु दुर्घटना के बाद वास्तविक परीक्षा प्रारंभ हुई पुलिस और न्यायालय की लंबी मानसिक प्रताड़ना। हर बार जब भी उन्हें पुलिस अथवा कोर्ट से संबंधित कार्य हेतु जाना होता, वे पहले श्रद्धापूर्वक श्री दादाजी के चरणों में दो अगरबत्तियाँ अर्पित कर विनती करते और फिर निकलते। उनका अनुभव था कि दादाजी की कृपा से अधिकारियों का व्यवहार उनके प्रति सदैव सम्मानपूर्ण रहता जबकि सामान्यतः वही अधिकारी अन्य लोगों के प्रति अत्यंत कठोर दिखाई देते थे।

पहली पेशी में माननीय जिला न्यायाधीश ने बच्चों को स्पष्ट कहा कि यदि दुर्घटना में दोष सिद्ध हुआ, तो कारावास और भारी जुर्माना दोनों भुगतने पड़ सकते हैं। प्रत्येक फ्रैक्चर पर पचास हजार रुपये तक का दंड लगाया जा सकता था। यह सुनकर परिवार अत्यंत चिंतित हो उठा। डॉ. अवधेश सिंह सीधे दादाजी धाम पहुँचे। उन्होंने धूनी में दो नारियल और अगरबत्तियाँ अर्पित कर करुण भाव से प्रार्थना की "दादाजी, इस संकट से मेरी रक्षा कीजिए।"

इसके पश्चात अगली पेशी पर उन्हें ज्ञात हुआ कि मामला निचली अदालत में स्थानांतरित कर दिया गया है। वहाँ सुनवाई प्रारंभ हुई। परिस्थितियाँ पूरी तरह प्रतिकूल थीं। गवाहों के बयान, पुलिस रिपोर्ट और अन्य साक्ष्य उन्हें दोषी सिद्ध करने के लिए पर्याप्त माने जा रहे थे। उनके अधिवक्ता ने भी स्पष्ट संकेत दे दिया था कि निर्णय कठिन हो सकता है तथा सजा एवं जुर्माने दोनों की संभावना है। 16 सितम्बर 2016 से प्रारंभ हुआ यह मुकदमा 28 फरवरी 2017 तक चला। निर्णय वाले दिन डॉ. अवधेश सिंह प्रातः 11 बजे ही न्यायालय पहुँच गए। मन में चिंता थी, परंतु हृदय में दादाजी के प्रति अटूट विश्वास भी था। संभावित सजा की आशंका को देखते हुए उन्होंने जमानतदार और आवश्यक दस्तावेज भी तैयार रखे थे, क्योंकि यदि तत्काल सजा हो जाती तो सीधे जेल जाना पड़ सकता था और उनका पूरा कैरियर संकट में पड़ जाता। पूरा दिन बेचैनी और प्रतीक्षा में बीता। सायं लगभग पाँच बजे माननीय न्यायाधीश महोदया ने उन्हें अपने समक्ष बुलाया और शांत स्वर में केवल इतना कहा "इस प्रकरण में आपको दोषमुक्त किया जाता है।"

न सजा हुई, न कोई जुर्माना लगाया गया। यह सुनते ही मानो वर्षों का बोझ उतर गया। स्वयं अधिवक्ता भी आश्चर्यचकित रह गए, क्योंकि सभी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद निर्णय उनके पक्ष में आया था। डॉ. अवधेश सिंह इसे केवल और केवल श्री दादाजी की कृपा, संरक्षण और अपनी श्रद्धा का प्रतिफल मानते हैं।

उनका दृढ़ विश्वास है कि जब भक्त सच्चे मन, विश्वास और समर्पण के साथ गुरु चरणों में प्रार्थना करता है, तब गुरु अदृश्य रूप से उसकी रक्षा करते हैं और असंभव प्रतीत होने वाले मार्ग भी प्रशस्त हो जाते हैं।

जैसा कि शास्त्रों में कहा गया है

"हरि अनंत, हरि कथा अनंता।"

उसी भाव को आगे बढ़ाते हुए भक्त भावविभोर होकर कहते हैं

"श्री दादाजी अनंत, उनकी कृपा अनंता, दादाजी के रूप में मिले स्वयं भगवंता।"

— भक्त डॉ. अवधेश सिंह

शासकीय सरदार वल्लभभाई पटेल पॉलीटेक्निक कॉलेज, भोपाल

अमृत योजना के तहत प्रस्तावित सीवेज लाइन कार्य का रहवासियों ने किया विरोध, धरना प्रदर्शन में शामिल हुए दीपक गुप्ता

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राजधानी के क्रिस्टल आइडल सिटी फेस-1 में अमृत योजना के अंतर्गत प्रस्तावित सीवेज लाइन कार्य को लेकर रहवासियों ने रविवार सुबह जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। कॉलोनी के एंट्रेंस गेट के समीप आयोजित धरना प्रदर्शन में बड़ी संख्या में रहवासी शामिल हुए और क्षेत्रीय विधायक एवं राज्य मंत्री कृष्णा गौर तथा भोपाल महापौर मालती राय के खिलाफ नाराजगी जाहिर की।

रहवासियों का कहना था कि प्रस्तावित सीवेज लाइन कार्य से कॉलोनी की सड़कें क्षतिग्रस्त होंगी, सुरक्षा व्यवस्था प्रभावित होगी तथा भविष्य में कई मूलभूत सुविधाओं पर असर पड़ सकता है। प्रदर्शनकारियों ने प्रशासन से योजना पर पुनर्विचार करने और रहवासियों की सहमति के बिना कार्य शुरू नहीं करने की मांग की।

धरना प्रदर्शन में श्रमिक कांग्रेस नेता दीपक गुप्ता भी शामिल हुए। उन्होंने रहवासियों का समर्थन करते हुए कहा कि जनता की समस्याओं और कॉलोनी के हितों की अनदेखी किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि यदि रहवासियों की मांगों पर ध्यान नहीं दिया गया तो आंदोलन को और व्यापक रूप दिया जाएगा।

इस अवसर पर मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के प्रदेश सचिव एवं क्रिस्टल आइडल सिटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष नवीन सराठे ने सभी रहवासियों का आभार व्यक्त करते हुए एकजुटता बनाए रखने की अपील की।

चौथे बड़े मंगल पर होगा विशेष हनुमान पूजन, सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ एवं भजन-कीर्तन

गंगा दशहरा गंगा मैया का श्रृंगार एवं अधिकमास के पावन संयोग पर दादाजी धाम में विशेष धार्मिक आयोजन

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जागृत एवं दर्शनीय तीर्थ स्थल दादाजी धाम मंदिर, पटेल नगर, रायसेन रोड, भोपाल में गंगा दशहरा एवं अधिकमास के पावन अवसर पर सोमवार से विशेष धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष गंगा दशहरा के साथ अधिकमास में सोमवार से नौतपा प्रारंभ होना अत्यंत दुर्लभ एवं शुभ संयोग माना जा रहा है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल दशमी के दिन माँ गंगा का स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। इसी पावन स्मृति में गंगा दशहरा पर्व श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाया जाता है। धार्मिक ग्रंथों में वर्णित है कि इस दिन माँ गंगा के पूजन, स्नान, दान, जप एवं आराधना से मनुष्य के दस प्रकार के पापों का नाश होता है तथा जीवन में सुख, शांति एवं आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता है। गंगा दशहरा आत्मशुद्धि, सदाचार एवं लोककल्याण की भावना को जागृत करने वाला महापर्व माना गया है।

पंडित राजेंद्र पलिया ने बताया कि दशमी तिथि 25 मई को प्रातः 7:53 बजे प्रारंभ होकर 26 मई को प्रातः 7:31 बजे तक रहेगी। इसी कारण गंगा दशहरा गंगा मैया का श्रृंगार पंडित जी द्वारा किया गया पूजन सोमवार एवं मंगलवार दोनों दिन विधि-विधान से कराया जाएगा। सभी श्रद्धालु माँ गंगा के पूजन-अर्चन में सहभागी होकर पुण्य लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

मंगलवार को चौथे बड़े मंगल के अवसर पर भगवान श्री हनुमान जी का विशेष पूजन किया जाएगा। इस अवसर पर नवीन वस्त्र एवं चोला अर्पित किया जाएगा। भक्तों द्वारा सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ किया जाएगा तथा सायंकाल महिलाओं द्वारा भजन-कीर्तन एवं संगीतमय आराधना प्रस्तुत की जाएगी, जिससे संपूर्ण मंदिर परिसर भक्तिमय वातावरण से आलोकित रहेगा।

श्री श्री 1008 श्री दादाजी गुरुदेव चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष शिवरतन नामदेव ने बताया कि ट्रस्ट द्वारा समय-समय पर धार्मिक, सांस्कृतिक एवं जनजागरण संबंधी कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन आयोजनों का उद्देश्य समाज में श्रद्धा, सेवा, संस्कार एवं आध्यात्मिक चेतना का प्रसार करना है।

बाल गुरुकुल शिविर में संस्कार भी स्किल भी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बाल गुरुकुल शिविर एक अनूठा प्रयास है जो कि बच्चों में संस्कार और कौशल को सही दिशा देकर उन्हें बेहतर इंसान बनाता हैं । यह शिविर 8 मई से 24 मई तक छत्तीसगढ़ सांस्कृतिक मंडल में आयोजित किया गया था । जिसमें बच्चों को वेद पाठ,सांस्कृतिक नृत्य , सेल्फ डिफेंस , अबेकस और क्राफ्ट विथ फन का प्रशिक्षण दिया गया । साथ ही स्पेशल संडे भी सेलिब्रेट किए जिसमें मदर्स डे,इंटरनेशनल फैमिली डे जो कि बच्चों और पेरेंट्स के लिए भी बहुत खास होता है । समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ सांस्कृतिक मंडल के अध्यक्ष श्री राकेश सिंह कर्ष जी एवं भूतपूर्व अध्यक्ष श्री रामदीन चंद्रा एवं कोषाध्यक्ष श्री एस आर हरसन जी उपस्थित रहे , बच्चों के द्वारा छत्तीसगढ़ एवं हरियाणा के पारंपरिक नृत्य की प्रस्तुति दी गई एवं अबेकस का डेमो भी दिया ,साथ ही वेद पाठ गायन एवं योगा मूव्स भी दिखाए गए ,अतिथियों द्वारा बच्चों को प्रमाण पत्र एवं मैडल पहनाए गए । साथ ही उत्कृष्ट प्रदर्शन वाले बच्चों को पुरस्कार भी दिया । जिसमें इस वर्ष की बाल गुरुकुल रत्न का अवार्ड कु. सौम्या बिल्लौरे को दिया गया । यह शिविर द कल्पवृक्ष इवेंट एवं UCMAS द्वारा आयोजित किया गया । अंत में शिविर के आयोजक सुश्री प्रियंका समुद्रे एवं सुश्री आशी गोस्वामी ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर आभार प्रदर्शन किया । इस शिविर की सफलता में सुश्री रुचि समुद्रे , टी देवाशीष , आशीष मेवाड़ा ,देवेंद्र सिंह राजपूत ,मुस्कान ,स्नेहा विश्वकर्मा , सुशांत रायपतवार,अनुपमा मिश्रा एवं अलीशा का मुख्य योगदान रहा ।

'रिदम्स ऑफ भोपाल 2026' में भारतीय शास्त्रीय नृत्य की सजी अनुपम छटा

कार्यशालाओं से मंचीय प्रस्तुतियों तक कलाकारों ने बिखेरा कला का रंग, दर्शक हुए मंत्रमुग्ध

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

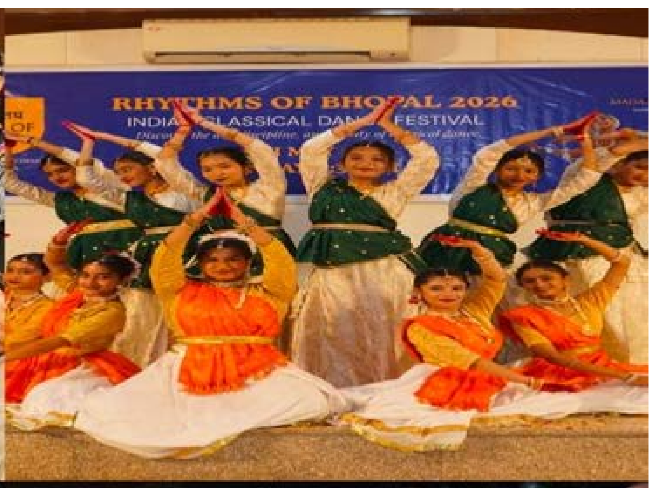

मदद फाउंडेशन द्वारा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के मार्गदर्शन में कोलार रोड स्थित जेके अस्पताल के एलएनसीटी ऑडिटोरियम में 'रिदम्स ऑफ भोपाल 2026' भारतीय शास्त्रीय नृत्य महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के साथ युवा पीढ़ी को शास्त्रीय कला से जोड़ना रहा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जेएनसीटी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं एलएनसीटी ग्रुप ऑफ कॉलेजेज भोपाल के सचिव डॉ. अनुपम चौकसे ने कहा कि समाज की मजबूती के लिए अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़े रहना आवश्यक है। उन्होंने इस प्रकार के आयोजनों को भारतीय कला एवं संस्कृति के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण बताया।

वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में अंतरराष्ट्रीय कथक नृत्यांगना एवं रायगढ़ घराने से जुड़ी डॉ. विजया शर्मा उपस्थित रहीं। वर्तमान में वे महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, भोपाल में नृत्य विभागाध्यक्ष हैं। उन्होंने युवा कलाकारों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य की परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ अतिथि के रूप में मीडिया एवं मनोरंजन क्षेत्र से जुड़े हरिओम जटिया भी उपस्थित रहे। उन्होंने कला और संस्कृति को समाज की पहचान बताते हुए ऐसे आयोजनों की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ एंकर पूर्वा शर्मा त्रिवेदी ने किया। आयोजन की सफलता में मदद फाउंडेशन की अध्यक्ष सुनंदा पहाड़े एवं उनकी टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों की कार्यशालाएं आयोजित : महोत्सव की विशेषता यह रही कि मुख्य कार्यक्रम से पूर्व विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों की कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इनमें विशेषज्ञ गुरुओं एवं प्रशिक्षकों ने प्रतिभागियों को नृत्य की बारीकियों से अवगत कराया। कार्यशालाओं में विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों और युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आयोजकों के अनुसार इसका उद्देश्य गुरु-शिष्य परंपरा को प्रोत्साहित करना तथा शास्त्रीय नृत्य को जनसामान्य तक पहुंचाना था।

मुख्य मंचीय प्रस्तुतियों में ओडिसी, भरतनाट्यम, कथक, राजस्थानी लोक नृत्य, गणेश वंदना, तराना तथा कृष्ण लीला आधारित नृत्य नाटिका 'वंदे भारत' ने विशेष आकर्षण बटोरा। कलाकारों की एकल एवं सामूहिक प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। विशेष रूप से 'वंदे भारत' नृत्य नाटिका ने देशभक्ति का भाव जागृत करते हुए खूब तालियां बटोरीं।

शास्त्रीय नृत्य को करियर के रूप में अपनाएं युवा : सुनंदा पहाड़े

मदद फाउंडेशन ने युवाओं से शास्त्रीय नृत्य को केवल रुचि तक सीमित न रखकर इसे करियर के रूप में अपनाने का आह्वान किया। संस्था की अध्यक्ष सुनंदा पहाड़े द्वारा बताया गया कि भविष्य में करियर काउंसलिंग सत्र आयोजित करने की भी योजना बनाई जा रही है। सुनंदा पहाड़े ने बताया कि 'रिदम्स ऑफ भोपाल' को वार्षिक आयोजन के रूप में स्थापित करने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही प्रदेश के अन्य शहरों में भी इस प्रकार के सांस्कृतिक आयोजन एवं प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने की योजना है। कार्यक्रम के अंत में कलाकारों, गुरुओं, विद्यार्थियों, अतिथियों एवं दर्शकों का आभार व्यक्त किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना मध्य प्रदेश के स्वयंसेवकों ने एम्स भोपाल में किया रक्तदान

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राष्ट्रीय सेवा योजना (रा.से.यो.) मध्य प्रदेश के स्वयंसेवकों द्वारा एम्स भोपाल में स्वैच्छिक रक्तदान कर मानव सेवा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर स्वयंसेवकों ने उत्साहपूर्वक रक्तदान करते हुए समाज में रक्तदान के प्रति जागरूकता फैलाने तथा जरूरतमंद मरीजों की सहायता करने का संदेश दिया। रक्तदान करने वाले स्वयंसेवकों में वैशाली रघुवंशी, आयुषी सिन्हा, आंचल शर्मा एवं राहुल लोधी शामिल रहे। स्वयंसेवकों द्वारा दान किया गया रक्त आपातकाल एवं आवश्यकता के समय जरूरतमंद मरीजों के लिए जीवनदायिनी सहायता साबित होगा। सभी स्वयंसेवकों ने युवाओं से अपील की कि वे नियमित रूप से रक्तदान कर मानवता की सेवा में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें, क्योंकि एक यूनिट रक्त किसी व्यक्ति को नया जीवन दे सकता है।

विशेष रूप से आयुषी सिन्हा ने बारहवें रक्तदान, राहुल लोधी ने पांचवां रक्तदान, वैशाली रघुवंशी ने चौथा रक्तदान एवं आंचल शर्मा ने तीसरा रक्तदान पूर्ण किया। स्वयंसेवकों की यह निरंतर सेवा भावना समाज के लिए प्रेरणादायी है।

एम्स भोपाल के चिकित्सकीय दल द्वारा स्वयंसेवकों के इस सराहनीय योगदान की प्रशंसा की गई। रक्तदान के दौरान सभी आवश्यक स्वास्थ्य मानकों एवं सुरक्षा प्रक्रियाओं का पालन किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना सदैव समाज सेवा, मानव कल्याण एवं जनजागरूकता से जुड़े कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाती रही है। स्वयंसेवकों का यह सेवा कार्य युवाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है तथा समाज में सकारात्मक संदेश प्रदान करता है।

कायस्थम 30 मई को 10वीं, 12वीं के 58 टापर्स चित्रांश विद्यार्थियों को सम्मानित करेगा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

कायस्थम मध्य प्रदेश द्वारा इस साल की 10 वीं एवं 12वीं बोर्ड परीक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक अंक लेकर उत्तीर्ण होने वाले 58 टॉपर्स चित्रांश विद्यार्थियों को 30 मई को भोपाल में आयोजित एक कार्यक्रम में सम्मानित किया जाएगा। कायस्थम ने कायस्थ मेधावी विद्यार्थी सम्मान के लिए चित्रांश विद्यार्थियों से प्रविष्टि मांगी थी। जिसके लिए मध्य प्रदेश से 60 से अधिक विद्यार्थियों ने अपना विवरण भेजा था । इनमे से 10 वीं बोर्ड के 40 और 12वीं बोर्ड के 18 विद्यार्थियों का चयन सम्मान के लिए किया गया है । कार्यक्रम शनिवार को सुबह 10.30 बजे से दुष्यंत संग्रहालय, शिवाजी नगर में होगा। कायस्थम प्रतिभा सम्मान समारोह में भोपाल के अलावा इंदौर, रीवा, जबलपुर, गंजबासौदा, विदिशा, सागर, आदि जिलों के विद्यार्थी प्राप्त करेंगे।

छतरपुर सम्मान : दिवंगतों की स्मृति में मिलेगी प्रोत्साहन राशिः कायस्थम मध्य प्रदेश के इस आयोजन में कायस्थ समाज के कुछ प्रमुख लोगों ने अपने दिवंगत परिजनों की स्मृति में सर्वाधिक प्राप्तांक वाले नो विद्यार्थियों को अपनी तरफ से स्मृति चिन्ह के अलावा प्रोत्साहन राशि देने की पहल की है। इनमे से बैंक से सेवानिवृत एजीएम श्री राकेश खरे ने स्व. श्री जगदीश नारायण खरे की स्मृति में 10 वीं में सर्वाधिक प्राप्तांक वाली कान्वेंट स्कूल ईदगाह भोपाल की दिया सक्सेना (99.2त्न) और प्रेजेटेशन कॉन्वेंट स्कूल जम्मू की 12 वीं की आराध्या खरे (98त्न) को अपने पिता हरिशंकर श्रीवास्तव की स्मृति में 3100-3100 रुपये, सहकारिता विभाग के ऑडिट ऑफिसर तुमुल सिन्हा ने अपने पिता स्व. श्री शिवप्रकाश सिन्हा की स्मृति में 12 वीं में द्वितीय सर्वाधिक 97त्न प्राप्तांक वाली अदिति श्रीवास्तव, 10 वीं में द्वितीय सर्वाधिक 99त्न प्राप्तांक वाले छात्र आकाँश सक्सेना तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के पूर्व वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राजेश सक्सेना ने अपनी माँ स्व. सुषमा देवी सक्सेना की स्मृति में कु. अनिका सक्सेना (99त्न) को 2500-2500 रुपये की प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की है। इसी प्रकार राजा रामन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केंद्र इंदौर के वैज्ञानिक अधिकारी भूपेंद्र भूषण श्रीवास्तव ने अपनी मां स्व. श्रीमती दुर्गावती श्रीवास्तव की याद में 10 वीं में तृतीय सर्वाधिक 96.4त्न प्राप्तांक वाली छात्रा कु. नम्रता सक्सेना एवं कु. एशिता श्रीवास्तव को तथा 12 वीं में तृतीय सर्वाधिक 98.2त्न प्राप्तांक वाली कु. दिवा श्रीवास्तव और अनुवंश सक्सेना को 1100-1100 रुपये की नगद प्रोत्साहन राशि देने की पहल की है। प्रोसाहन राशि कायस्थम के सम्मान, प्रमाणपत्र के अलावा दी जाएगी।

रीवा आर्यिका संघ सड़क दुर्घटना के विरोध में सकल जैन समाज का मौन जुलूस, भवानी चौक सोमवारा पर सभा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

रीवा मे आर्यिका संघ के साथ हुई सड़क दुर्घटना को लेकर सकल जैन समाजमें गहरा रोष हे, आज प्रदेश सहित देश में जैन समाज आंदोलन रत रही, इसके विरोध में भोपाल में सकल जैन समाज द्वारा विरोध स्वरूप काली पट्टी बांधकर मौन जुलूस निकाला गया, चौक धर्मशाला में मुनि संभव सागर महाराज ने आशीष वचन में कहा संत केवल समाज के नहीं अपितु भारत की अमूल्य संपदा हे, देश में संत सुरक्षा प्रोटोकॉल तुरंत लागू होना चाहिए, तत्पश्चात मौन जुलूस जैन समाज ने निकाला जो चौक मंदिर से सुभाष चौक सराफा लखेरापूरा होते हुए भवानी चौक सोमवारा पर आया यहां प्रशासन के कहने पर समाज जन सोमवारा पर रुक गए, ओर विरोध सभा में समाज के लोगो ने कहा आर्यिका उपशम मति माताजी आर्यिका श्रुत मति माताजी की रीवा में हुई सड़क दुर्घटना गहरी साजिश हे, ये दुर्घटना नहीं हत्या हे, देश के विभिन्न शहरों में आए दिन हो रही सड़क दुर्घटना में पैदल पद विहार कर रहे संतों को नुकसान हो रहा है, विरोध सभा में महिलाएं हाथों में तख्तियां लिए थी जिस पर लिखा था, तपस्वियों की रक्षा मानवता संयम और भारतीय संस्कृति की रक्षा हे,, निहत्थे संतो पर प्रहार मानवता पर प्रहार हे, प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया समाज द्वारा राष्ट्र पति प्रधान मंत्री प्रदेश मुख्य मंत्री के नाम ज्ञापन ए डी एम अधिकारी को दिया गया, , इस अवसर दिगंबर जैन श्वेतांबर जैन समाज सहित सभी मंदिरों समिति सामाजिक संगठन महिला संगठन के पदाधिकारी सहित सकल जैन समाज के लोग मौजूद थे।

'हिन्दी लेखिका संघ, म.प्र. भोपाल' के ततत्त्वावधान में दिनांक 25/5/26 को गरिमामय 'ऑनलाइन लोक बोली कविता पाठ' गोष्ठी का आयोजन किया गया

गाँव की सुधि हिय से न जाये पिया- सुनीता यादव

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

इसमें विभिन्न अंचलों की लोक बोलियों की गूँज सुनाई दी, जिसमें कवयित्रियों ने अपनी आंचलिक रचनाओं के माध्यम से संस्कृति और माटी की सुगंध को जीवंत कर दिया। कार्यक्रम की शुरुआत मांडवी सिंह द्वारा प्रस्तुत सुमधुर भोजपुरी 'सरस्वती वंदना' से हुई। इसके पश्चात् हिन्दी लेखिका संघ, म.प्र. भोपाल की अध्यक्ष डॉ. साधना गंगराड़े ने अपने स्वागत वक्तव्य से सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का आत्मीय स्वागत किया । कार्यक्रम का कुशल और सफल संचालन डॉ. विनीता राहुरीकर ने किया।

मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार श्री सुरेश कुशवाहा 'तन्मय' उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में लेखिका संघ की बहनों की सृजनात्मकता को सराहते हुए उनके विविध पक्षीय विषयों के चयन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए अपनी रचना सुनाई ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती जनक कुमारी सिंह बघेल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि मध्य प्रदेश की बोलियों की उत्पत्ति और विकास के विषय में बताया और उनकी सहजता आत्मीयता के जुड़ा बताते हुए अपनी बघेली रचना प्रस्तुत की।

लेखिका संघ की इस ऑनलाइन गोष्ठी में मध्य प्रदेश और आसपास के क्षेत्रों की विभिन्न लोक बोलियों का अद्भुत संगम देखने को मिला। कार्यक्रम में बुन्देली बोली में डॉ. संगीता भारद्वाज, श्रीमती सुनीता यादव, श्रीमती साधना श्रीवास्तव, डॉ. वन्दना मिश्रा, डॉ. रेणु श्रीवास्तव, सुसंस्कृति सिंह, डॉ. मंजू मिश्रा, करुणा श्रीवास्तव ने और निमाड़ी में विभा भटोरे ,डॉ साधना गंगराड़े ने और मालवी बोली में श्रीमती महिमा वर्मा एवं सरोज दवे ने भोजपुरी बोली में श्रीमती नमिता सेन गुप्ता ने छत्तीसगढ़ी बोली में डॉ. साधना शुक्ला एवं सुधा वर्मा (रायपुर) ने भदावरी बोली में श्रीमती उषा चतुर्वेदी ने निमाड़ी बोली में विभा भटोरे ने अवधी बोली में आशा सिन्हा कपूर और सुधा गुप्ता (जबलपुर) सहित अनेक कवयित्रियों ने अपनी प्रभावी प्रस्तुतियाँ दीं । पूर्व अध्यक्ष उषा जायसवाल , कुंकुम गुप्ता , मालती बसंत भी उपस्थित रहीं ।

दक्षिण की तीन महिला नेताओं पर नजर

दक्षिण भारत की राजनीति से आमतौर पर उत्तर में लोगों को ज्यादा मतलब नहीं होता है। फिर भी जब दक्षिण के राज्यों में कुछ दिलचस्प राजनीति हो रही हो या कुछ बड़ा बदलाव होता दिखता तो लोग दिलचस्पी लेते हैं। जैसे फिल्म स्टार विजय के तमिलनाडु का मुख्यमंत्री बनने पर सबकी नजर थी। ऐसे ही अगले कुछ दिन में दक्षिण के तीन राज्यों में तीन महिला नेताओं की राजनीति पर नजर रखने की जरुरत होगी। तमिलनाडु में कनिमोझी, तेलंगाना में के कविता और आंध्र प्रदेश में वाईएस शर्मिला ये तीनों नेता हैं, जो बड़े नेताओं की बेटी हैं और स्वतंत्र राजनीतिक अस्तित्व बनाना चाहती हैं। इसलिए इन तीनों की राजनीति पर नजर रखने की जरुरत है।

कनिमोझी की राजनीति सबसे दिलचस्प हो सकती है। अभी तक वे अपने भाई एमके स्टालिन की छाया में थीं। अब स्टालिन नेपथ्य में जा रहे हैं और उनके बेटे उदयनिधि स्टालिन कमान संभाल रहे हैं। लेकिन डीएमके के नेता मान रहे हैं कि उनसे पार्टी को फायदा नहीं होगा। इसलिए कनिमोझी को आगे लाने का प्रयास हो रहा है। डीएमके ने लोकसभा में अपने को कांग्रेस से अलग कर लिया है। अगर दिल्ली में कनिमोझी के जरिए डीएमके और भाजपा नजदीक आते हैं तो एक बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है। ऐसे ही के कविता ने तेलंगाना में अलग पार्टी बना ली है। अब उनके पिता भी राजनीतिक रूप से सक्रिय नहीं हैं और उनका मुकाबला अपने भाई केटी रामाराव से है। वहां भी भाजपा के साथ कविता का बेहतर तालमेल बन सकता है। शर्मिला अभी कांग्रेस में हैं, जिसके खिलाफ आंध्र के लोगों का गुस्सा ठंडा नहीं पड़ा है। तभी शर्मिला भी अपनी नई पोजशनिंग की तैयारी में हैं।

क्वॉड बस औपचारिकता है!

अब चूंकि चीन की घेराबंदी अमेरिका की तात्कालिक प्राथमिकता नहीं है, तो जाहिर है, इस मकसद के लिए बने समूह भी उसकी प्राथमिकता सूची में नीचे चले गए हैं। क्वॉड इसी परिवर्तन का शिकार बना है। भारत में क्वाड्रैंगुलर सिक्युरिटी डॉयलॉग (क्वॉड) का शिखर सम्मेलन होना था, लेकिन महज विदेश मंत्रियों की बैठक से ये औपचारिकता निभाई जा रही है। भारत को 2025 की मेजबानी मिली थी, लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप पूरे साल इसके लिए समय नहीं निकाल पाए। अब 2026 में अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने नई दिल्ली आने का वक्त निकाला है, तो चार देशों के इस समूह की बैठक संभव हो पाई है। रुबियो के बयानों से साफ है कि भारत में उनका ज्यादा ध्यान द्विपक्षीय मसलों पर केंद्रित है। आने से पहले उन्होंने कहा कि अमेरिका भारत को उसकी जरूरत के मुताबिक तेल बेचने को तैयार है। साथ ही भारत अब वेनेजुएला से ज्यादा तेल खरीदेगा। इस वर्ष जनवरी में वेनेजुएला पर अमेरिकी हमले और वहां के राष्ट्रपति निकलस मदुरो के अपहरण के बाद से वहां के तेल का कारोबार अमेरिकी कंपनियां ही कर रही हैं। वैसे रुबियो उन कंपनियों के लिए सौदे की तलाश को क्वॉड के एजेंडे से ज्यादा अहमियत दे रहे हैं, तो उसकी पृष्ठभूमि स्पष्ट है। क्वॉड स्पष्टतः चीन को घेरने की अमेरिकी रणनीति के तहत उस समय बना, जब अमेरिका की यही भू-राजनीतिक प्राथमिकता थी। जबकि अपने दूसरे कार्यकाल में ट्रंप प्रशासन ने अलग रणनीति अपनाई है। उसने पहले पश्चिमी गोलार्द्ध पर अमेरिकी वर्चस्व कायम करने की रणनीति अपनाई है। इसी समझ के तहत हाल में ट्रंप अपनी बीजिंग यात्रा के दौरान चीन के साथ 'रणनीतिक स्थिरता उन्मुख रचनात्मक संबंध' के प्रस्ताव पर सहमत हो गए। अब चूंकि चीन विरोधी घेराबंदी अमेरिका की तात्कालिक प्राथमिकता नहीं है, तो जाहिर है, इस मकसद के लिए बने समूह भी उसकी प्राथमिकता सूची में नीचे चले गए हैं। मगर अमेरिका के इस नीति- परिवर्तन से भारत, जापान, और ऑस्ट्रेलिया की चुनौतियां बढ़ी हैं। क्वॉड एक कारण था, जिससे इन देशों का चीन से तनाव बढ़ा। तब इन देशों ने अमेरिकी सुरक्षा रणनीति पर भरोसा कर अपना बड़ा दांव लगाया। मगर अब अमेरिका अपने "सहयोगियों" की चिंताओं को सिरे से नजरअंदाज कर रहा है। ट्रंप का ना आना इसकी मिसाल था। रुबियो की यात्रा भी उसी बात की पुष्टि कर रही है।

चीन ने नहीं किया है कोई चमत्कार!

भारत में आज मायूसी है और अब एक बड़ा आर्थिक संकट देश पर मंडरा रहा है, तो कारण 1991 के बाद पूंजी के सामने राज्य का पूर्ण समर्पण में तलाशने की जरूरत है। साथ ही इन प्रश्नों पर विचार की आवश्यकता है कि नेहरूवादी नीतियों के दौर में भारत में सार्वजनिक उद्यम लगाए गए, लेकिन देश का कारखाना क्षेत्र कभी वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य क्यों नहीं बन पाया? कुशल इन्फ्रास्ट्रक्चर और निर्यात क्षमता हासिल करने में भी वह क्यों विफल रहा? इन प्रश्नों के जवाब ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में छिपे हुए हैएक अंग्रेजी अखबार के ऑप-एड पेज पर छपी एक टिप्पणी के इस शीर्षक ने बरबस ध्यान खींचा- 'आर्थिक विकास के लिए चाहिए अर्जुन, अथवा देंग की तरह एकाग्रता।' ये कमेंट किसी अर्थशास्त्री ने नहीं, बल्कि भारत के नामी वकील ने लिखा है। स्पष्टतः यहां देंग से मतलब चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के पूर्व सर्वोच्च नेता देंग श्याओपिंग से है। जब से आर्थिक महाशक्ति के रूप में भारत उदय के बहु-प्रचारित कथानक का ढहना शुरू हुआ, भारत के मीडिया और आम चर्चाओं में चीन के इस तरह के उदाहरणों का उल्लेख बढ़ता चला गया है। इस वर्ष जब भारतीय अर्थव्यवस्था के डगमगाने और देश पर मंडरा रहे गंभीर आर्थिक संकट का अहसास फैला है, तो ऐसी चर्चाओं की बाढ़ आ गई है। अभी चार-पांच साल पहले तक भारत में चीन की विकास कथा का जिक्र करना जोखिम भरा था। ऐसा करने वाले पर चीन का एजेंट होने या चीन के नैरेटिव को फैलाने का आरोप तब सहज मढ़ दिया जाता था। तब कहानी यह थी कि भारत चीन का प्रतिस्पर्धी है! भारत अपने लोकतंत्र एवं खुले समाज के साथ तीव्र आर्थिक विकास के मार्ग पर अग्रसर है! चीन ने अगर कुछ हासिल किया भी है, तो वह लोकतंत्र के अभाव एवं नागरिक अधिकारों के दमन के साथ किया है! आज कहानी पलट गई है। अब पश्चिमी देशों के साथ-साथ भारतीय मीडिया और सार्वजनिक चर्चाओं में भी चीन की हैरान कर देने वाली प्रगति की चर्चा छाई हुई है। भारत में अब ये अहसास भी है कि 'हम पिछड़ गए हैं'! बहरहाल, चीन के आगे बढ़ जाने और अपने पिछड़ जाने के जिन कारणों की अक्सर चर्चा होती है, वो एक बार फिर से भ्रामक हैं। इन पर बात करने की जरूरत इसलिए है, क्योंकि इन भ्रामक चर्चाओं से भारतवासियों में आत्म-हीनता का अनावश्यक भाव पैदा होगा। जबकि सही कारणों पर बात की जाए, तो बात सही जगह- यानी समाधान की ओर जाएगी। गलत निष्कर्ष यह होगा कि चीन की सभ्यता में ऐसे तत्व है, जिन्होंने उसकी विकास यात्रा को आसान बनाया। या फिर देंग श्याओपिंग कोई करिश्माई शख्सियत थे, जिन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में अभिनव दृष्टि अपनाई और चीन आज जो कुछ है, वह उसका ही परिणाम है। सभ्यता वाले पहलू का सीधा जवाब यह है कि परंपरागत रूप से उन तत्वों की मौजूदगी के बावजूद 1839-42 के अफीम युद्ध में ब्रिटेन ने चीन को बुरी तरह पराजित कर उसके 'अपमान की शताब्दी' की शुरुआत की थी। तब सभ्यता की शक्ति उसका बचाव नहीं कर पाई थी! जहां तक देंग के योगदान का सवाल है, तो उसे भी संदर्भ में देखने की जरूरत है। देंग के हाथ में कमान आने के पहले 1949 की क्रांति के बाद से चीन क्या हासिल कर चुका था, उसे जानने के लिए 1981 में विश्व बैंक की आई रिपोर्ट पर गौर कर लेना भर काफी होगा। विश्व बैंक ने चीन के बारे में अपनी रिपोर्ट जून 1981 में- चाइनाः सोशलिस्ट इकोनॉमिक डेवलपमेंट– नाम से प्रकाशित की थी। नौ भाग वाली इस व्यापक अध्ययन रिपोर्ट में स्वीकार किया गया कि आर्थिक रूप से चीन भले अपेक्षाकृत गरीब हो, लेकिन शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन प्रत्याशा जैसे सामाजिक संकेतकों पर माओ जेदुंग के काल में उसने उल्लेखनीय प्रगति की। इस दौर में, साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

"बेयरफुट डॉक्टर" कार्यक्रम और ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं ने आम लोगों को बुनियादी चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराईं। संक्रामक रोगों पर नियंत्रण और टीकाकरण अभियान सफल रहे। 1949 में चीन में औसत जीवन प्रत्याशा लगभग 35 वर्ष थी, जो 1970 के दशक तक 65 वर्ष तक पहुंच गई। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं का अपेक्षाकृत समान वितरण हुआ। महिलाओं की भागीदारी और अधिकारों में भारी सुधार हुआ। तो इस मजबूत जमीन पर देंग श्याओपिंग के कार्यकाल में 'सुधार और

दरवाजा खोलने' की नीति अपनाई गई। चीन का कोई गंभीर अध्ययनकर्ता ये दलील नहीं दे सकता कि माओ के दौर में बनी जमीन के बिना देंग के दौर की नीतियां सफल हो सकती थीं। दरअसल, देंग पर बात करते हुए इस तथ्य को नजरअंदाज कर दिया जाता है कि उनके दौर में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी माओ युग से संबंध विच्छेद कहीं ज्यादा उस नीतिगत निरंतरता के साथ आगे बढ़ी, जिन पर 1970 के दशक के आरंभ से विचार किया जाने लगा था। देंग ने बार-बार यह स्पष्ट किया था कि चीन में कम्युनिस्ट पार्टी का वर्चस्व (Party Leadership) अटूट और अपरिहार्य है। उन्होंने कहा था कि आर्थिक सुधार और खुलापन (Reform and Opening Up) केवल कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में ही संभव हैं। इस नीति पर चीन की कम्युनिस्ट पार्टी में आज तक कोई भ्रम नहीं है। भारत ने स्वतंत्रता के बाद अपना अलग रास्ता चुना था, हालांकि विकास की चुनौतियां दोनों देशों के सामने एक जैसी थीं। दोनों देशों ने अपनी विकास यात्रा लगभग साथ-साथ शुरू की- भारत ने 1947 और चीन ने 1949 में। दोनों देशों ने पंचवर्षीय योजना का मार्ग चुना। हार्वर्ड येनचिंग इंस्टीट्यूट में विजिटिंग फेलॉ, साउथ एशिया रिसर्च ब्रीफ के संस्थापक और भारतीय अर्थव्यवस्था के अध्ययनकर्ता केजी माओ ने एक महत्त्वपूर्ण विवरण का उल्लेख किया है। उसके मुताबिक 1955 की सर्दियों में प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के आमंत्रण पर चीन के जाने-माने अर्थशास्त्री चेन हानसेंग भारत आए। उन्हें प्रधानमंत्री निवास में ठहराया गया। रोज नाश्ते और रात के भोजन के समय नेहरू उनसे लंबा वार्तालाप करते थे। चीन में अपनाई गई नीतियों की जानकारी भारतीय प्रधानमंत्री ने उनसे हासिल की। इसका जिक्र खुद नेहरू ने उन पत्रों में किया, जो हर पखवाड़े वे मुख्यमंत्रियों को लिखते थे। केजी माओ के मुताबिक एक पड़ोसी एशियाई देश में हो रही उल्लेखनीय प्रगति को जानकर नेहरू ने प्रसन्नता का इजहार किया। साथ ही उन्होंने चीन से स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की जरूरत भी महसूस की। 1954 में जब भारत अपनी दूसरी पंचवर्षीय योजना बनाने में जुटा हुआ था, नेहरू ने कहा था- 'हमारी समस्याएं एशिया के अविकसित देशों जैसी हैं। इसी वजह से चीन में जो हो रहा है, उसमें हमारी खास दिलचस्पी है। आज मुझमें रोमांच भरने वाले दो देश भारत और चीन हैं।' बताया जाता है कि निजी बातचीत में पंडित नेहरू भारत को चीन से आगे रखने का संकल्प जताते थे। उन्होंने कहा था- 'बेशक हमारा (भारत और चीन का) राजनीतिक एवं आर्थिक ढांचा अलग-अलग है, मगर हमारे सामने मौजूद समस्याएं एक जैसी हैं। भविष्य बताएगा कि कौन-सा देश और किसकी शासन प्रणाली हर क्षेत्र में बेहतर परिणाम प्रदान करती है।' अगर कहा जाए कि वो "भविष्य" आज आ चुका है और अपना फैसला सुना चुका है, शायद इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। लेकिन इस मायूसी में गलत निष्कर्ष निकालने, चीन का अनावश्यक महिमामंडन करने, और खुद को कोसने की जरूरत नहीं है। दरअसल, ऐसा करके निराशा से घिरने के अलावा हम कहीं नहीं पहुंचेंगे। मुद्दा वो नीतियां और पहलू हैं, जिन्होंने चीन के विकास और प्रगति को सुनिश्चित किया है। असल में, वो नीतियां सिर्फ वहीं सफल रही हों, ऐसा भी नहीं है। और यह कहते हुए इस स्तंभकार के ध्यान में सिर्फ सोवियत संघ, कम्युनिस्ट दौर में पूर्वी यूरोप, क्यूबा, उत्तर कोरिया और वियतनाम भर नहीं हैं। बल्कि इस चर्चा में उन्हें हम छोड़ भी सकते हैं।उनके बजाय इस क्रम में हम अमेरिका (खास कर दूसरे विश्व युद्ध के बाद से लेकर 1980 तक), जापान, दक्षिण कोरिया, और ताइवान आदि पर नजर डाल सकते हैं। दरअसल, हम 1950 से 1990 तक के भारत के अपने अनुभव पर भी गौर सकते हैं। इन सबके मामले में समान पहलू यह है कि समृद्धि के सामाजिक बंटवारे (अलग-अलग देशों में इसका परिमाण अलग रहा) के साथ आर्थिक विकास का सबसे बेहतरीन दौर तभी आया, जब राज्य ने अर्थव्यवस्था में अपनी हस्तक्षेपकारी भूमिका बनाई। जब राज्य ने प्राथमिकताएं तय कीं, औद्योगिक नीति का निर्देशन किया, संसाधनों के वितरण में सक्रिय रहा, मुद्रा विनिमय को नियंत्रित किया, और आयात-निर्यात की नीतियों पर अमल सुनिश्चित कराया। तब राज्य अपने यहां मौजूद पूंजी का विकास एवं सामाजिक समृद्धि के हित में अधिकतम सकारात्मक उपयोग कर पाया। उस समय मूल रूप से पूंजीवादी व्यवस्थाओं में भी भले ही सीमित, लेकिन महत्त्वपूर्ण भूमिका राज्य कैसे निभा पाया, यह अलग विमर्श का विषय है। इस दलील में दम है कि कम्युनिज्म की चुनौती और मेहनतकश तबकों में सांगठनिक चेतना के प्रसार के दबाव में उन देशों के शासक वर्ग यह रियायत देने को मजबूर हुए थे। बहरहाल, उस दौर का तजुर्बा यही बताता है कि विकास और प्रगति को तय करने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू यही होता है कि राज्य एवं पूंजी के बीच रिश्ता कैसा है? निर्णायक पहलू यह है कि राज्य पूंजी को निर्देशित करता है या पूंजी राजकीय ढांचे पर अपना नियंत्रण बना लेती है? China as a System सब्सटैक पर छपी एक टिप्पणी की इन पंक्तियों पर गौर कीजिएः 'पूंजी कभी स्वतः राज्य की क्षमता नहीं बनती। पूंजी कारखानों में जा सकती है, अथवा रियल एस्टेट में जा सकती है। यह टेक्नोलॉजी में जा सकती है या फिर वित्तीय दांव लगाने में जा सकती है। यह निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता विकसित करने में लग सकती है, या फिर अभिजात वर्ग संचालित रेंट की अर्थव्यवस्था में जा सकती है। विकास के नतीजे तय करने वाला वास्तविक पहलू यह है कि क्या राज्य पूंजी प्रवाह की दिशा तय करने, पूंजी के व्यवहार को सीमित करने, और पूंजी संग्रहण को औद्योगिक क्षमता में परिवर्तित कर सकने की स्थिति में है?' तजुर्बा यह है कि राज्य में ऐसा कर सकने की जितनी अधिक क्षमता होगी, वहां विकास एवं प्रगति के लक्ष्य उस हद तक हासिल हो सकते हैं। अमेरिका में फ्रैंकलीन डिलेनो रुजवेल्ट के समय राज्य ने यह क्षमता दिखाई। तब से अमेरिकी पूंजीवाद के कथित स्वर्ण काल की शुरुआत हुई, जिसके परिणामस्वरूप मध्य वर्ग का उदय एवं प्रसार के साथ अमेरिकी स्वप्न की धारणा दुनिया भर में फैली। जापान, दक्षिण कोरिया, और ताइवान में भी राज्य ने ऐसी क्षमताएं उस दौर में दिखाईं (हालांकि उनके विकास का एक पहलू यह भी रहा कि उनकी पीठ पर अमेरिका का हाथ था, जिसने पूरे पश्चिम के बाजार को उन्हें सुलभ कराया)। नव-उदारवाद के दौर में खासकर अमेरिका का क्षय राज्य पर फिर से पूंजी के बने नियंत्रण का परिणाम है। अब भारत पर ध्यान दें। भारत के पास उद्यमियों, बाजार, तकनीकी हुनर आदि की कमी नहीं है। भारत के पास बड़ी आबादी, सॉफ्टवेयर उद्योग, और वित्तीय बाजार है। ये सब उसी दौर का परिणाम हैं, जब नेहरूवादी नीतियों के तहत राज्य ने पूंजी प्रवाह की दिशा को प्रभावित करने की क्षमता दिखाई थी। उसके अलावा लोकतंत्र एवं खुले समाज की छवि के साथ पश्चिम में उसका सॉफ्ट पॉवर भी बना था, जिससे उसे एक दौर में विदेशी पूंजी को आकर्षित करने में काफी सफलता मिली। इसके बावजूद भारत में आज मायूसी है और अब एक बड़ा आर्थिक संकट देश पर मंडरा रहा है, तो कारण 1991 के बाद पूंजी के सामने राज्य का पूर्ण समर्पण में तलाशने की जरूरत है। साथ ही इन प्रश्नों पर विचार की आवश्यकता है कि नेहरूवादी नीतियों के दौर में भारत में सार्वजनिक उद्यम लगाए गए, लेकिन देश का कारखाना क्षेत्र कभी वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य क्यों नहीं बन पाया? कुशल इन्फ्रास्ट्रक्चर और निर्यात क्षमता हासिल करने में भी वह क्यों विफल रहा? इन प्रश्नों के जवाब ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में छिपे हुए हैः विकास यात्रा पर चलने के पहले चीन की तरह भारत में ऐसी सामाजिक क्रांति नहीं हुई, जिससे वर्गीय संबंधों में आमूल बदलाव आता। भूमि सुधारों पर अमल करके ऐसा हो सकता था, लेकिन निहित स्वार्थों का निर्णायक प्रभाव बने रहने के कारण ऐसा नहीं हुआ।

–सत्येन्द्र रंजन0

12वीं के बच्चों का दुःस्वप्न!

भारत सरकार का शिक्षा मंत्रालय गजब कर रहा है। उसकी एजेंसियां जैसे केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड यानी सीबीएसई और मेडिकल दाखिले की परीक्षा कराने वाली एनटीए आदि जो कर रहे हैं वह तो और भी गजब है। किसी की कोई जवाबदेही नहीं है। 12वीं की परीक्षा के नतीजे और नीट का पेपर रद्द होने से लाखों बच्चे परेशान हो रहे हैं। उनके अभिभावक परेशान हो रहा हैं। लोगों को पैसे का नुकसान हो रहा है। 17 से 19 साल की उम्र के किशोर बच्चों के किस मानसिक हालत में होंगे इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। लेकिन सरकार के ऐसा लग रहा है कि किसी बात की परवाह नहीं है। 12वीं बोर्ड परीक्षा के इस बार के नतीजे और उसके बाद के घटनाक्रम के बारे में पढ़ सुन कर ऐसा लग रहा है, जैसे व्यक्ति अवसाद में चला जाएगा। सरकार और सीबीएसई ने परीक्षा को दुःस्वप्न बना दिया है। इस बार 12वीं के बोर्ड की परीक्षा में 17 लाख से कुछ ज्यादा बच्चे शामिल हुए थे। सीबीएसई ने तय किया कि इस बार ऑनस्क्रीन मार्किंग होगी। हो सकता है कि कुछ देशों में ऐसा होता हो लेकिन भारत जैसे विशाल देश में जहां इतनी बड़ी संख्या में बच्चे परीक्षा देते हैं वहां

एक व्यावहारिक नहीं था। ऑनस्क्रीन मार्किंग के लिए 17 लाख बच्चों की 80 लाख उत्तर पुस्तिकाओं को स्कैन किया गया। उसके बाद उन्हें अपलोड किया गया। उसके बाद स्कैन कॉपी खोल कर उनकी जांच की गई। कई पन्ने ठीक से स्कैन नहीं थे और पढ़ा नहीं जा रहा था तब भी उनकी जांच कर दी गई। कुछ पन्नों को दोबारा स्कैन करना पड़ा। इसके बाद मार्किंग का मामला आया तो ऐसी सख्ती हुई कि छात्रों को अंक बहुत कम हो गए। पहले जांच का सिस्टम इतना लचीला था कि अगर बच्चों ने गणित का कोई सवाल आठ स्टेप की बजाय छह स्टेप में कर दिया और उत्तर सही है तो उसे पूरे अंक मिल जाते थे। लेकिन इस बार ऐसा नहीं हुआ है। यह नियम अपनाया गया कि जैसा पढ़ाया गया है वैसा लिखो तो नंबर मिलेंगे। अगर अपनी रचनात्मकता दिखाई तो नंबर कट जाएंगे। इसका नतीजा यह हुआ है कि लाखों बच्चे, जिन्होंने इंजीनियरिंग में दाखिले की जेईई मेन्स परीक्षा में 85 से 90 या उससे ज्यादा पर्सेंटाइल हासिल किया उनको 12वीं में 75 फीसदी अंक नहीं आए। ऐसे बच्चे आईआईटी में दाखिले के लिए जेईई एडवांस की परीक्षा नहीं दे सकते हें। इससे उनके दुःस्वप्न का दूसरा दौर शुरू हुआ। बच्चों ने उत्तर पुस्तिकाओं के लिए पुनर्मूल्यांकन का आवेदन करना शुरू किया। इसके लिए आवेदन शुरू होने के पहले तीन घंटे में एक लाख 26 हजार से ज्यादा बच्चों से आवेदन किया। यह कुल छात्रों की संख्या का सात फीसदी थी। इससे पहले दो से तीन फीसदी छात्र पुनर्मूल्यांकन के लिए जाते थे। जब तीन घंटे में ही सात फीसदी ने आवेदन कर दिया तो सीबीएसई ने आगे का आंकड़ा बताना बंद कर दिया। आवेदन के दौरान बच्चों के सामने जो समस्या आई वह अभूतपूर्व है। पुनर्मूल्यांकन के लिए वेबसाइट का लिंक सीधे उपलब्ध नहीं है। सीबीएसई के एक्स हैंडल से जाकर बच्चे लिंक खोल रहे हैं। लिंक खुलने के बाद जब वे रजिस्टर करा रहे हैं तो दूसरे स्टेप में वेरिफिकेशन के लिए कहा जाता है और जब बच्चे वेरिफिकेशन के लिए जाते हैं तो नॉट रजिस्टर्ड का मैसेज आ जाता है। फिर दोबारा रजिस्ट्रेशन के लिए जाते हैं तो बताया जाता है कि वे पहले से रजिस्टर्ड हैं। इसी तरह एक कॉपी की जांच की फीस एक सौ रुपए है लेकिन पेमेंट गेटवे पर कई बच्चों को 10 हजार से साढ़े तीन लाख रुपए तक जमा करने के मैसेज आए। जब सवाल उठा तो सीबीएसई ने कहा कि उसकी साइट हैक हो गई है। यह मामला इतने पर समाप्त नहीं होता है। कई ऐसी खबरें आई हैं कि बहुविकल्पी सवालों में सही जवाब होने पर भी नंबर काट दिए गए हैं। सरकार ने कहा है कि अगर किसी छात्र का एक भी नंबर बढ़ता है तो उससे पैसे नहीं लिए जाएंगे। इससे भी बच्चे घबराए हैं। उनको लग रहा है कि अब जान बूझकर नंबर नहीं बढ़ाए जाएंगे। सोचें, प्रधानमंत्री 10वीं और 12वीं के बच्चों के साथ परीक्षा पर चर्चा करते हैं और परीक्षा देने के बाद बच्चे इतना बड़ी मुसीबत से जूझ रहे हैं लेकिन प्रधानमंत्री की ओर से एक शब्द सुनने को नहीं मिला है।

केवल 1.8 करोड़ `कॉकरोच'!

भला इतने कम 'कॉकरोच'! बावजूद इसके देसी ऑनलाइन जमात का उछलना! हल्ला कि देखो, पांच दिनों में ही कॉकरोच जनता पार्टी के फॉलोवर भाजपा से अधिक हुए! योगेंद्र यादव ने तपाक से कहा, एक मीम ने देश के भीतर की सुगबुगाहट दिखला दी। वही प्रधानमंत्री मोदी के होश उड़े। केंद्र सरकार की खुफिया एजेंसी आईबी को कॉकरोचों के पीछे लगाया गया। सरकार को चैन तभी हुआ जब कॉकरोच जनता पार्टी के एक्स (ट्विटर) खाते पर ताला लगा। सोचें, भारत सरकार पर। उसे इतना भी ध्यान नहीं कि कॉकरोच कभी खत्म नहीं होते। कहा जाता है परमाणु विस्फोट में भी कॉकरोच बच के निकल जाते हैं! शायद इसलिए कॉकरोच पार्टी के फॉलोवरों का डिजिटल जोश कायम है। बावजूद इसके इनके लिए भी सोचने वाली बात होनी चाहिए कि पांच दिन में केवल 1.8 करोड़ 'कॉकरोच' ही क्यों जुड़े! जिस देश में राज्य/समाज/बाज़ार/मंदिर/चौराहे पर खड़े खैरातियों/लाभार्थियों की संख्या सौ करोड़ से अधिक है, उसमें इतने कम फॉलोवरों का ऑनलाइन आना क्या बतलाता है। मध्यवर्ग के ही कॉकरोच उछल रहे हैं। गरीब-गुरबे दूर ही हैं। असल बात कॉकरोच राजनीति का भारत कमाल है। माईबाप सरकार निश्चित ही चिंता में है। पांच दिनों में यदि 1.8 करोड़ 'कॉकरोच' ऑनलाइन दिखलाई दे जाएं तो वह समय दूर नहीं है जब सरकार 140 करोड़ की भीड़ की परजीविता से हाथ खींच ले। सोचें, भारत में 'फर्जी और बेहूदा डिग्री' वाले कॉकरोच किसने पैदा किए हैं? क्या सरकार और उसकी व्यवस्थाओं, राजनीति ने नहीं? मोदी सरकार में यह काम विशाल पैमाने में हुआ। तभी टॉप से लेकर नीचे तक 'फर्जी और बेहूदा डिग्री' धारी कॉकरोच चौतरफा फैले हैं। किसी ने किसी की कृपा से मंत्री पद पाया, जज पद पाया तो तो प्रभु की कृपा के परजीवी भक्तों और स्वयंसेवकों की भी कमी नहीं है। भाजपा ने ही सर्व शिक्षा अभियान शुरू किया था। बिना परीक्षा के भी कक्षा-दर-कक्षा ऊपर बैठाने के सिलसिले से पैदा डिग्रीधारी नौजवान शक्ति। तभी कौन हिसाब लगा सकता है

कि कितने करोड़ ऐसे कॉकरोच घूम रहे हैं? अमित शाह को जनगणना से इसकी (परजीवियों की) जानकारी जरूर एकत्र करानी चाहिए। कितने बेरोजगार, इधर-उधर हाथ-पांव मारते हुए परजीवी हैं? संख्या बीस करोड़ मानें या चालीस करोड़? हां, कॉकरोच की भारत परिभाषा में 'परजीविता' पहली शर्त है। मतलब न काम का, न काज का और दुश्मन अनाज का। अपना पेट भरने के लिए दूसरों को तंग करता हुआ, दूसरों पर आश्रित, खैरात, धर्मादा, राशन आदि की कतार में लगी लाभार्थी भीड़ तो आरटीआई, एक्टिविस्टों की भीड़ भी! परजीवियों का अपना कोई मूल्य-सृजन नहीं होता। परिश्रम नहीं, बुद्धि नहीं और जिंदा रहने के लिए मात्र राज्य/समाज/बाज़ार/मंदिर/चौराहे पर हाथ पसारे खड़े हुए या सवाल करते हुए, नींद में खलल डालते हुए।मनुष्य गरिमा में परजीविता याकि कॉकरोच का रूपक बहुत खराब है। बावजूद इसके भारत में आज अपने आपको कॉकरोच बतलाती भीड़ है तो क्या अर्थ है? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कॉकरोचों की डिजिटल उपस्थिति पर भी प्रतिबंध लगाया तो क्यों? क्या पता चंद महीनों में पचास-सौ करोड़ लोग अपने को कॉकरोच बताएं और दुनिया सोचने लगे कि भारत किनका देश है, मोदी किनके प्रधानमंत्री हैं? जो हो, इक्कीसवीं सदी का भारत सत्य परजीवियों की भीड़ है। केवल मोदी सरकार माईबाप और बाकी सब याकि विधायिका हो या न्यायपालिका या मीडिया या प्रजा, सब उनके आसरे जिंदा। क्या यह आज की हकीकत नहीं है? लाभार्थी याकि परजीवी आबादी ही विकसित भारत की छलांग है। यों बतौर राजनीतिक रूपक के कॉकरोच मामूली नहीं हैं। कॉकरोच 140 करोड़ आबादी की वास्तविकताओं के कई सत्य उकेरता है। ध्यान रहे, कॉकरोच बिना व्यवस्थाओं के भी जिंदा रह लेते हैं। कॉकरोच शरीर ऐसे ganglia (छोटे nerve centers) लिए होता है, जिससे उसके बेसिक मूवमेंट, रिफ्लेक्स अपने आप काम करते हैं। उसमें दिमाग नहीं होता। शरीर स्वंय चलता होता है। कॉकरोच शरीर के किनारों पर छोटे छेदों (spiracles) से सांस लेता है। सिर न होने पर भी उसे ऑक्सीजन मिलती रहती है। मतलब उसका जीवन सोच के बिना भी, आदत अनुसार शरीर के जीवन-नियंत्रण स्थापत्य में चलता होता है। वह मारने से नहीं मरता। भले स्प्रे करें, चप्पल मारें, रोशनी जलाएं, वह भागेगा, छिपेगा पर फिर लौट आएगा। वह स्थितियों से एडजस्ट कर जीता है! कॉकरोच अंधेरे का याकि झूठ में जीने वाला प्राणी है। उसे उजाला, सत्य पसंद नहीं। वह दरारों, पाइपों, रसोई के पीछे, व्यवस्था की नमी में दबा हुआ फलता है!

उस नाते योगेंद्र यादव ने ठीक कहा है कि कॉकरोच के मीम के लिए फटाफट उमड़े अनुयायियों से जाहिर है, बदबू, गंदगी, सीलन का आज कैसा समय है। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि सोशल मीडिया उबाल से कोई क्रांति पैदा हो जाए! संभव ही नहीं है। कॉकरोच, कॉकरोच जैसे ही जिएंगे। भारत में राशन/सब्सिडी/लाभार्थी/क्रोनीवाद से ऐसे परजीवी पैदा हुए हैं जो मीम्स की घोषणाओं, मैनिफेस्टो से विचलित नहीं होने वाले हैं।

–हरिशंकर व्यास

इजरायल को मान्यता देंगे पाकिस्तान समेत कई मुस्लिम देश? ट्रंप बोले- अब्राहम समझौते में तुरंत शामिल हों

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पाकिस्तान और सऊदी अरब समेत दर्जनों मुस्लिम देशों को अब्राहम समझौते में तुरंत शामिल होने को कहा है। उन्होंने कहा है कि सऊदी अरब, पाकिस्तान, तुर्की और कतर जैसे देशों को ईरान समझौते का हिस्सा बनने के लिए अब्राहम अकॉर्ड्स' (Abraham Accords) पर दस्तखत करने होंगे। उन्होंने यहां तक कहा कि अगर ईरान समझौता करता है, तो उसे भी अब्राहम अकॉर्ड्स में शामिल किया जा सकता है। अब्राहम समझौता अमेरिका की मध्यस्थता में सितंबर 2020 में हस्ताक्षरित ऐतिहासिक शांति समझौते की एक श्रृंखला है। इसका मुख्य उद्देश्य इजरायल और कई अरब देशों के बीच राजनयिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को सामान्य बनाना है, जो यहूदियों और अरबों के साझा पूर्वज 'अब्राहम' के नाम पर आधारित है। ट्रंप ने ट्रूथ सोशल पर लिखा, "ईरान के साथ बातचीत बहुत अच्छे से आगे बढ़ रही है। यह या तो सभी के लिए एक बहुत बड़ी डील होगी, या फिर कोई डील नहीं होगी। हम वापस युद्ध के मैदान में होंगे और गोलियां चलेंगी, लेकिन पहले से कहीं ज्यादा बड़े और जोरदार तरीके से और कोई भी ऐसा नहीं चाहता। शनिवार को सऊदी अरब के राष्ट्रपति मोहम्मद बिन सलमान अल सऊद, संयुक्त अरब अमीरात के मोहम्मद बिन जायेद अल नाहयान, कतर के अमीर तमीम बिन हमद बिन खलीफा अल थानी, प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन अब्दुल रहमान बिन जसीम बिन जाबेर अल थानी और मंत्री अली अल-थवादी, पाकिस्तान के फील्ड मार्शल सैयद आसिम मुनीर अहमद शाह, तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन, मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फत्ताह अल-सीसी, जॉर्डन के राजा अब्दुल्ला द्वितीय और बहरीन के राजा हमद बिन ईसा अल खलीफा के साथ अपनी चर्चाओं के दौरान, मैंने कहा कि, इस बहुत ही पेचीदा पहेली को सुलझाने के लिए अमेरिका द्वारा किए गए तमाम प्रयासों के बाद, यह अनिवार्य होना चाहिए कि ये सभी देश, कम से कम, एक ही समय पर,

अब्राहम समझौते पर हस्ताक्षर करें।" ट्रंप ने आगे कहा, "जिन देशों पर चर्चा हुई, वे हैं सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात (जो पहले से ही सदस्य है!), कतर, पाकिस्तान, तुर्की, मिस्र, जॉर्डन और बहरीन (जो पहले से ही सदस्य है!)। हो सकता है कि एक या दो देशों के पास ऐसा न करने का कोई कारण हो, और उसे स्वीकार कर लिया जाएगा, लेकिन ज्यादातर देशों को ईरान के साथ इस समझौते को, अन्यथा की तुलना में, कहीं ज्यादा ऐतिहासिक घटना बनाने के लिए तैयार, इच्छुक और सक्षम होना चाहिए।" उन्होंने कहा, "अब्राहम समझौते, इसमें शामिल देशों (संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, मोरक्को, सूडान और कजाकिस्तान) के लिए, संघर्ष और युद्ध के इस दौर में भी, एक वित्तीय, आर्थिक और सामाजिक 'बूम' (तेजी) साबित हुए हैं। मौजूदा सदस्यों ने कभी भी इसे छोड़ने या इसमें जरा सा भी विराम लेने का सुझाव तक नहीं दिया है। इसका कारण यह है कि अब्राहम समझौते उनके लिए बहुत फायदेमंद रहे हैं, और सभी के लिए और भी बेहतर साबित होंगे, तथा 5,000 वर्षों में पहली बार मध्य पूर्व में सच्ची शक्ति, मजबूती और शांति लाएंगे।" ट्रंप ने आगे कहा, "यह एक ऐसा दस्तावेज होगा जिसका सम्मान दुनिया में कहीं भी, अब तक हस्ताक्षरित किसी भी अन्य दस्तावेज से कहीं ज्यादा किया जाएगा। इसका महत्व और प्रतिष्ठा बेजोड़ होगी! इसकी शुरुआत सऊदी अरब और कतर द्वारा तत्काल हस्ताक्षर करने से होनी चाहिए, और बाकी सभी को भी उनका अनुसरण करना चाहिए। अगर वे ऐसा नहीं करते, तो उन्हें इस डील का हिस्सा नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे उनकी बुरी नीयत जाहिर होती है। ऊपर बताए गए कई महान नेताओं से बात करने पर, उन्होंने कहा कि जैसे ही हमारा दस्तावेज साइन हो जाएगा, उन्हें ईरान को अब्राहम अकॉर्ड्स का हिस्सा बनाने में गर्व महसूस होगा। वाह, यह तो सचमुच कुछ बहुत ही खास होगा! यह सबसे अहम डील होगी जिसे इन महान, लेकिन हमेशा आपस में झगड़ने वाले देशों में से कोई भी देश कभी साइन करेगा।" ईरान को भी अब्राहम समझौते में शामिल होने को कहा अमेरिकी राष्ट्रपति ने आगे कहा, "न तो अतीत में और न ही भविष्य में, कोई भी चीज इसकी बराबरी कर पाएगी। इसलिए, मैं सभी देशों से जोर देकर गुजारिश करता हूँ कि वे तुरंत अब्राहम अकॉर्ड्स पर साइन करें, और अगर ईरान भी मेरे साथ— अमेरिका के राष्ट्रपति के तौर पर—अपना समझौता साइन करता है, तो उन्हें भी इस बेमिसाल वैश्विक गठबंधन का हिस्सा बनाना मेरे लिए गर्व की बात होगी। मध्य पूर्व एकजुट, ताकतवर और आर्थिक रूप से मजबूत होगा—शायद दुनिया के किसी भी दूसरे हिस्से से कहीं ज़्यादा! इस सच्चाई की एक कॉपी भेजकर, मैं अपने प्रतिनिधियों से कह रहा हूं कि वे इन देशों को पहले से ही ऐतिहासिक अब्राहम अकॉर्ड्स में शामिल करने की प्रक्रिया शुरू करें और उसे सफलतापूर्वक पूरा करें। इस मामले पर ध्यान देने के लिए आपका धन्यवाद!"

खुफिया जहाज ने अचानक भारत के पास चालू किया सिग्नल, मचा तहलका

एजेंसी तेल अवीव

समंदर के बीचों-बीच एक जहाज भारत की तरफ बढ़ रहा था। इस जहाज के बारे में किसी को नहीं पता था क्योंकि इस जहाज ने अपना सिग्नल बंद कर रखा था। लेकिन जैसे ही यह जहाज भारत के पास पहुंचा तो इसने अपना सिग्नल ऑन कर दिया और उसके बाद जो खबर आई उसने तहलका मचा दिया। पीएम मोदी ने यूरोप जाने से पहले ढाई घंटे संयुक्त अरब अमीरात में एक हाई लेवल मीटिंग की थी। दरअसल एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि ईरान अमेरिका जंग के बाद पहली बार एक जहाज संयुक्त अरब अमीरात से लिक्विफाइड नेचुरल गैस भरकर भारत ले आया है। लेकिन उससे भी दिलचस्प बात यह है कि जब ये जहाज अबू धाबी के दास आइलैंड पर खड़ा था और गैस को लोड कर रहा था तब इस जहाज ने अपने सिग्नल्स को बंद कर रखा था ताकि किसी को ना पता चले कि यह जहाज़ यहां खड़ा है। गैस भर कर यह जहाज़ बिना सिग्नल ऑन किए भारत की तरफ निकल पड़ा और जब यह जहाज़ खतरे वाले इलाके से निकल कर भारत के नजदीक पहुंचा, तो इसने अपना सिग्नल ऑन कर लिया।

वैश्विक ऊर्जा संकट के बीच इस जहाज ने भारत तक लिक्विफाइड नेचुरल गैस पहुंचा दी है। इस जहाज ने कितनी धमाकेदार तरकीब निकाली और बिना सिग्नल ट्रांसमिट किए बगैर स्ट्रेट ऑफ हॉर्मोस और परशियन गल्फ के पास से होता हुआ यह भारत पहुंच गया। यह है भारत और संयुक्त अरब अमीरात की दोस्ती की ताकत। बहरहाल इसी बीच बढ़ते तेल संकट के बीच भारत लगातार कुछ ना कुछ कदम उठा रहा है। जिससे भारतीय लोगों पर बढ़ते तेल दामों की मार सबसे कम पड़े। दुनिया के कई बड़े-बड़े विकसित देश तेल के दामों को दुगना कर चुके हैं। लेकिन 150 करोड़ की आबादी वाला भारत अभी भी चुनौतियों से डटकर मुकाबला कर रहा है। इसी कड़ी में अचानक वेनेजुएला भारत का तीसरा सबसे बड़ा ऑयल सप्लायर बन गया है। लेकिन ऐसा क्यों हुआ है वह सच आपको चौंका देगा। एक डाटा के मुताबिक वेनेजुएला ने मई के महीने में भारत को लगभग 47,000 बैरल तेल प्रतिदिन भेज दिया। अप्रैल के महीने में यह मात्रा 2,83,000 बैरल प्रतिदिन थी और उससे पहले 9 महीने तक भारत ने वेनेजुएला पर सेंशंस के चलते तेल ही नहीं खरीदा था। अब सवाल यह है कि भारत अचानक वेनेजुएला से इतना तेल क्यों खरीद रहा है? इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि वेनेजुएला के तेल के दाम कम है। ग्लोबल ऑयल मार्केट इस वक्त प्रेशर में है। सेंशंस हटने के बाद रूसी तेल महंगा हो गया है। स्टेट ऑफ हॉर्मोस के चलते सऊदी अरब का तेल भी महंगा हो गया है। ऐसे में भारत के लिए वेनेजुएला का तेल दुनिया के मुकाबले सस्ता है। आपको बता दें कि वेनेजुएला का तेल हैवी और हाई सल्फर क्रूड ऑयल है। दुनिया में चुनिंदा देश ही हैं जो वेनेजुएला के तेल को रिफाइन कर सकते हैं। इसीलिए इस तेल की डिमांड बहुत ज्यादा नहीं है क्योंकि ज्यादातर देशों के पास ऐसी रिफाइनरीज ही नहीं है कि वह इतना हैवी क्रूड ऑयल रिफाइन कर सके।

भारत के MQ-9 रीपर का जवाब, तुर्की से बायराकटार किजिल्मा ड्रोन खरीदेगा पाकिस्तान

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तान जल्द ही तुर्की से बायराकटार किजिल्मा ड्रोन खरीद सकता है। इसके संकेत हाल में ही पाकिस्तानी वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल जहीर बाबर सिद्धू की तुर्की यात्रा से मिले हैं। उन्होंने 22 मई को तुर्की में बायकर टेक्नोलॉजीज की फैसिलिटी का दौरा किया और बायराकटार किजिल्मा ड्रोन के साथ फोटो भी खिंचवाई। बायराकटार किजिल्मा ने छह महीने पहले ही एक बियॉन्ड-विजुअल-रेंज मिसाइल से एक लक्ष्य को मार गिराया था। इसे भारत के अमेरिका से खरीदे जाने वाले MQ-9 रीपर का जवाब माना जा रहा है। MQ-9 रीपर अमेरिका का सबसे ज्यादा युद्ध क्षेत्र में इस्तेमाल किया जाने वाला ड्रोन है। पाकिस्तानी वायुसेना लंबे समय से तुर्की के बायकर टेक्नोलॉजीज के ड्रोन का इस्तेमाल कर रही है। इसमें बायराकटार अकिंसी ड्रोन और बायराकटार टीबी-2 ड्रोन शामिल हैं। इस बीच बायकर टेक्नोलॉजीज ने पाकिस्तान में अपनी एक पूर्ण सहायक कंपनी बायराकटार टेक्नोलॉजी पाकिस्तान की भई स्थापना की है। इसके अलावा उसने अनुसंधान और विकास कार्यों

के लिए नेशनल एयरोस्पेस साइंस एंड टेक्नोलॉजी पार्क (NASTP) के साथ एक सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। बायकर टेक्नोलॉजीज पाकिस्तान के भीतर एक महत्वपूर्ण उत्पादन फैसिलिटी भी निर्माण कर रही है। इसके अलावा वह पाकिस्तान में लगातार इंजीनियरों की भर्ती के लिए अभियान भी चला रही है। NASTP में Baykar के काम से पहले KaGeM V3 शार्ट रेंज एयर लॉन्च क्रूज मिसाइल का निर्माण हुआ था। ऐसे में माना जा रहा है कि बायकर टेक्नोलॉजी पाकिस्तान में एक असेंबली लाइन से ज्यादा की तैयारी कर रहा है। सबसे ज्यादा संभावना पाकिस्तान के साथ मिलकर नया ड्रोन बनाने की है, जिसका इस्तेमाल भारत के खिलाफ किया जा सकता है।

बायराकटार किजिल्मा ड्रोन पाकिस्तानी वायुसेना की क्षमता को कई गुना बढ़ा सकती है। इसमें अडवांस सेंसर, स्वदेशी डेटा लिंक, घरेलू स्तर पर तैयार किए हुए हथियार लगे हुए हैं।

किजिल्मा ड्रोन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और स्वायत्त उड़ान क्षमताओं से लैस है। इसे जमीन के अलावा विमान वाहक पोतों से भी संचालित किया जा सकता है।

बायराकटार किजिल्मा ड्रोन को हवा से हवा में युद्ध के लिए डिजाइन किया गया है। इसने हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल गोकडोगन के जरिए जेट-संचालित हवाई लक्ष्य को नष्ट कर इतिहास रचा है।

किजिल्मा ड्रोन की अधिकतम गति लगभग 0.9 मैक तक है और यह अधिकतम 8.5 टन के वजन के साथ उड़ान भर सकता है। इसकी पेलोड ले जाने की क्षमका 1.5 टन है।

भारत की ब्रह्मोस मिसाइल पर तुर्की के सबसे बड़े दुश्मन की नजर, डील हुई तो एर्दोगन के उड़ेंगे होश

एजेंसी निकोसिया

तुर्की के सबसे बड़े दुश्मनों में शुमार साइप्रस ने भारत की ब्रह्मोस मिसाइल में रुचि दिखाई है। यह खबर तब आई है, जब साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलाइड्स ने हाल में ही भारत का दौरा किया है। इस दौरान दोनों देशों ने आपसी संबंधों को रणनीतिक साझेदारी तक पहुंचाने का ऐलान किया है। ऐसे में अगर साइप्रस को ब्रह्मोस मिसाइल बेचने की डील फाइनल हो जाती है तो इसे तुर्की और मुस्लिम देशों का नया खलीफा बनने की कोशिश कर रहे राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन के लिए बहुत बड़ा झटका माना जाएगा। तुर्की और साइप्रस के बीच पुरानी दुश्मनी है। तुर्की कई दशक से साइप्रस के एक बड़े भूभाग पर अवैध कब्जा किया हुआ है। इसे लेकर दोनों देशों के बीच तनाव है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलाइड्स ने नई दिल्ली में हुई एक बैठक के दौरान 5 साल का एक पक्का रक्षा सहयोग रोडमैप (2026–2031) पर चर्चा की है। इस डिफेंस रोडमैप के हिस्से के तौर पर, साइप्रस के वरिष्ठ अधिकारियों ने इस बात की पुष्टि की कि उनका देश भारत से उन्नत सैन्य साजो-सामान खरीदने में बहुत ज्यादा दिलचस्पी रखता है। साइप्रस ब्रह्मोस मिसाइल के जरिए अपने विशेष आर्थिक क्षेत्रों (EEZ) की सुरक्षा को पुख्ता बनाना चाहता है। इसके अलावा वह एक ऐसा हथियार भी रखना चाहता है, जिससे तुर्की खौफ खाए। एक रिपोर्ट के अनुसार, साइप्रस की मुख्य दिलचस्पी भारत की मिसाइलों और ड्रोन सिस्टम में है। खास तौर पर उन हथियारों में जिन्हें भारत ने अपने हालिया सैन्य अभियानों (ऑपरेशन सिंदूर) के दौरान इस्तेमाल किया था और जिनकी क्षमता साबित हो चुकी है। इसमें ब्रह्मोस मिसाइल और स्वदेशी लोटरिंग म्यूनिशन अहम हैं, जिन्हें भारत की अलग-अलग कंपनियां बनाती हैं। हालांकि, साइप्रस ने आधिकारिक रूप से भारत के सामने ब्रह्मोस मिसाइल खरीदने का प्रस्ताव पेश नहीं किया है, लेकिन इसकी संभावना बहुत ज्यादा है कि इसे जल्द ही अंजाम दिया जा सकता गहै। ब्रह्मोस मिसाइल ने एक साल पहले ऑपरेशन सिंदूर के दौरान अपनी ताकत का जबरदस्त प्रदर्शन किया था। उसने पाकिस्तान के कई एयरबेसों को सटीक हमलों से बर्बाद कर दिया था। इन हमलों में पाकिस्तान को भारी नुकसान उठाना पड़ा था। चूंकि, पाकिस्तान और तुर्की के रक्षा संबंध काफी मजबूत हैं और दोनों एक दूसरे के हथियारों का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे में साइप्रस भारत की ब्रह्मोस मिसाइल के जरिए तुर्की पर भारी पड़ सकता है। भारत भी ब्रह्मोस मिसाइल के खरीदारों की तलाश कर रहा है, जिसके लिए साइप्रस एक उपयुक्त उम्मीदवार है।

ट्रंप की आंखों में धूल झोंक रही सीआईए? ईरान के असली 'पावर सेंटर' को लेकर हुआ खुलासा, सच छिपा रहा है US

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा के वरिष्ठ अधिकारियों जिनमें CIA डायरेक्टर, रक्षा सचिव और उपराष्ट्रपति शामिल थे के साथ एक उच्च-स्तरीय बैठक की है। इस बैठक का मकसद इस्लामिक गणराज्य ईरान के साथ संभावित सैन्य टकराव की संभावना पर बात की गई है। वॉशिंगटन के मिडिल ईस्ट स्टडीज के रिसर्चर और एनालिस्ट इरफान फर्द ने कहा है कि वाइट हाउस के करीबी सूत्रों का कहना है कि ट्रंप कूटनीतिक बातचीत में आई रुकावट से काफी हताश हो चुके हैं और अब इस संकट को खत्म करने के उपाय के तौर पर वे एक "निर्णायक अंतिम सैन्य अभियान" के विकल्प पर विचार कर रहे हैं। उन्होंने लिखा है कि कतर और पाकिस्तान ने फिर से स्थिति को बिगड़ने से रोकने के लिए आखिरी समय में कोशिशें की हैं लेकिन लगता है कि वो कोशिशें अंत में नाकाम साबित होने वाली हैं। इरफान फर्द ने जेरूशलम पोस्ट में लिखा है कि हालांकि अभी तक कोई अंतिम फैसला नहीं लिया गया है लेकिन ऐसा लगता है

कि यह टकराव एक संभावित रूप से खतरनाक मोड़ की ओर बढ़ रहा है जिससे एक गहरा रणनीतिक सवाल खड़ा होता है कि क्या CIA, मोसाद के साथ तालमेल बिठाकर अब सत्ता परिवर्तन के बजाय एक तेजी से यथार्थवादी लक्ष्य बना रही है? इरफान फर्द ने संभावना जताते हुए लिखा है कि शायद मोसाद और सीआईए ईरान को लेकर ट्रंप प्रशासन को ये जानकारी ही नहीं दी कि असल में वो किससे निपट रहे हैं? ये ऐसी दुविधा के सामने आ खड़ा हो चुका है जिससे अमेरिका की खुफिया एजेंसियां CIA दशकों से जूझती आ रही हैं। अमेरिका अभी भी इस्लामिक गणराज्य के "राजनयिक दिखावे" की बात करता है जबकि असली सत्ता IRGC के पास चली गई है। जब 1979 की उथल-पुथल ईरान में सफल हुई तो CIA को असल में यह समझ ही नहीं आया कि खोमेनी कौन थे न ही उसे यह पूरी तरह से समझ आया कि उन्हें चलाने वाला वैचारिक इंजन यानी शिया धर्मगुरु की तानाशाही और 'विलायत-ए फ़कीह' का सिद्धांत आखिरकार तेहरान में एक धार्मिक तानाशाही और एक शिया इस्लामी खिलाफत को जन्म देगा। उन्होंने लिखा है कि CIA यह भी सही-सही भांपने में नाकाम रहा कि मध्य-पूर्व में अमेरिका का सबसे वफादार और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण सहयोगी ईरान के दिवंगत शाह मोहम्मद रजा पहलवी की सत्ता चली जाएगी। यहां तक कि 1983 में बेरूत स्थित अमेरिकी दूतावास पर हुए बम धमाके के बाद भी CIA पूरे क्षेत्र में इस्लामी आतंकवाद के तेजी से फैलते जाल को पूरी तरह से समझने में असमर्थ ही नजर आया। इस सच्चाई को न तो आसानी से छिपाया जा सकता है और न ही इतिहास से मिटाया जा सकता है।

चीन की गीदड़भभकी पर मिला करारा जवाब, अगला दलाई लामा भारत से होगा

एजेंसी नई दिल्ली

तिब्बत के आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा का अगला अवतार। दरअसल चीन ने एक बार फिर गीदड़ भभकी दे दी है। चीनी दूतावास की प्रवक्ता हैं यू जिन जिन्होंने साफ शब्दों में भारत को चेतावनी दे डाली है कि वो दलाई लामा के पुनर्जन्म की प्रक्रिया में हस्तक्षेप बिल्कुल ना करें। चीन का साफ कहना है कि यह उनका आंतरिक मामला है। लेकिन सवाल तो यह है कि आखिर जिस देश की सरकार नास्तिकता में विश्वास रखती है, वह एक आध्यात्मिक अवतार के लिए इतना बेचैन क्यों है? दरअसल चीनी प्रवक्ता यूजिंग ने सोशल मीडिया पर लिखा कि दलाई लामा का पुनर्जन्म पूरी तरह चीन का आंतरिक मसला है। उन्होंने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन यानी कि तिब्बत की निर्वासी सरकार को अवैध बताया और कहा कि भारत को तिब्बत की आजादी की वकालत करने वालों को मंच नहीं देना चाहिए। लेकिन चीन की इस बौखलाहट की टाइमिंग बहुत महत्वपूर्ण है। हाल ही में भारत के अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरण रिजिजू ने खुलकर कहा कि जो लोग दलाई लामा को मानते हैं उनका यह मानना है कि पुनर्जन्म का फैसला दलाई लामा की इच्छा और परंपरा के अनुसार होना चाहिए। अब भारत का यह कड़ा रुख ही चीन की परेशानी की सबसे बड़ी वजह बन चुका है। अब सवाल आता है कि चीन दलाई लामा को खुद क्यों नहीं चुनना चाहता है? इसके पीछे के तीन बड़े कारण हैं। पहला कारण है पूर्ण नियंत्रण। चीन चाहता है कि अगला दलाई लामा उनकी कम्युनिस्ट पार्टी यानी सीसीपी की कठपुतली हो। अगर दलाई लामा चीन का होगा तो तिब्बत और दुनिया भर के बौद्ध समुदाय पर बीजिंग का कब्जा पक्का हो जाएगा। दूसरा कारण है भारत का डर। तिब्बत की निर्वासी सरकार धर्मशाला भारत में है। चीन को डर है कि अगला दलाई लामा भारत के तवांग यानी कि अरुणाचल प्रदेश या किसी और क्षेत्र से चुना जा सकता है। अगर ऐसा हुआ तो तिब्बत पर चीन के अवैध कब्जे का दावा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिट्टी में मिल जाएगा। तीसरा कारण है कानून का बहाना। चीन गोल्डन अर्न यानी कि सोने की कलश वाली एक पुरानी पद्दति का हवाला देता है और कहता है कि उनकी मंजूरी अनिवार्य है। जबकि 14वें दलाई लामा ने साफ कर दिया है कि उनका पुनर्जन्म किसी स्वतंत्र देश में होगा ना कि चीनी कब्जे वाले तिब्बत में। कैसे चुना जाता है दलाई लामा यह प्रक्रिया जितनी रहस्यमई होती है, उतनी ही पवित्र भी होती है। दरअसल, तिब्बती बौद्ध धर्म में यह कोई चुनाव नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक खोज है। वर्तमान दलाई लामा अपनी मृत्यु से पहले कुछ संकेत छोड़ जाते हैं। जैसे कोई कविता या पत्र जो उनके अगले जन्म की दिशा बताते हैं। वरिष्ठ भिक्षु तिब्बत की लुहमा, लातसो पवित्र झील पर जाकर ध्यान लगाते हैं। कहते हैं कि झील के पानी में उन्हें उन रास्तों या घरों के दृश्य दिखाई देते हैं जहां बच्चे का जन्म हुआ है। भिक्षु भेष बदलकर उन जगहों पर जाते हैं और ऐसे बच्चों की तलाश करते हैं जिनमें अद्भुत लक्षण हो। फिर आता है अंतिम परीक्षा। दरअसल यह सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है दोस्तों। बच्चे के सामने कई वस्तुएं रखी जाती है। कुछ पिछले दलाई लामा को असली चीजें जैसे कि चश्मा, माला और कुछ उनकी नकल। अगर बच्चा बिना गलती के अपने पिछले जन्म की चीजों को पहचान लेता है तो उसे अवतार मान लिया जाता है।

कमिंस, स्टार्क और हेजलवुड को पाकिस्तान-बांग्लादेश दौरे से मिला आराम... टीम के हेड कोच ने किया बड़ा खुलासा

एजेंसी मेलबर्न

ऑस्ट्रेलिया के मुख्य कोच एंड्रयू मैकडोनाल्ड ने आगामी पाकिस्तान और बांग्लादेश के खिलाफ सीमित ओवरों की सीरीज से पैट कमिंस, मिचेल स्टार्क और जोश हेजलवुड जैसे स्टार खिलाड़ियों को आराम दिए जाने पर बड़ा बयान दिया है। मैकडोनाल्ड ने साफ किया कि इन तीनों सीनियर तेज गेंदबाजों को ड्रॉप नहीं किया गया है, बल्कि यह क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया की वर्कलोड मैनेजमेंट रणनीति का एक हिस्सा है। कोच ने यह भी स्पष्ट किया कि तीनों तेज गेंदबाज वनडे वर्ल्ड कप 2027 में ऑस्ट्रेलियाई अभियान का नेतृत्व करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं और यह फैसला उनके शरीर को आने वाले व्यस्त कैलेंडर के लिए तैयार करने के लिए लिया गया है।

ऑस्ट्रेलियाई टीम को आने वाले समय में एक साल के भीतर रिकॉर्ड 21 टेस्ट मैच खेलने हैं। इतने व्यस्त और थकाऊ शेड्यूल को देखते हुए क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने इन तीनों गेंदबाजों को ब्रेक देने का फैसला किया। एंड्रयू मैकडोनाल्ड ने आलोचना करने वालों को जवाब देते हुए कहा, 'लोग सिर्फ आने वाले मैचों को देखते हैं और सवाल उठाते हैं कि वे वहां क्यों नहीं खेल रहे हैं? लेकिन अगर आप साल 2027 से पीछे की ओर गणना करें और हमारे आगे के शेड्यूल को देखें, तो यह आखिरी सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण ब्रेक है जो हमें मिला है। हम इस समय का उपयोग उनके शरीर को मजबूत बनाने और निवेश करने के लिए करना चाहते हैं ताकि वे बिना किसी परेशानी के 2027 वर्ल्ड कप तक खेल सकें। हमारा प्लान यही है कि ये तीनों 2027 वर्ल्ड कप में हमारे साथ रहें।' भले ही इन तीनों को पाकिस्तान और बांग्लादेश दौरे से आराम दिया गया हो, लेकिन वर्तमान में ये तीनों खिलाड़ी भारत में आईपीएल 2026 का हिस्सा हैं। इनमें से पैट कमिंस और जोश हेजलवुड की टीमें प्लेऑफ के दौर में पहुंच चुकी हैं, जहां वे खिताबी जंग के लिए मैदान पर उतरेंगे। ऐसे में इन खिलाड़ियों पर अभी काफी ज्यादा दबाव है और अगर वह आईपीएल जैसे लंबे टूर्नामेंट के बाद इंटरनेशनल क्रिकेट खेलने उतरते हैं तो, उन्हें काफी नुकसान हो सकता है। प्लेयर्स के आराम के अलावा, कोच मैकडोनाल्ड ने ऑस्ट्रेलिया के धाकड़ टी20 स्पेशलिस्ट टिम डेविड को लेकर भी एक बड़ा अपडेट दिया। कोच ने खुलासा किया कि टिम डेविड ने खुद को वनडे फॉर्मेट के लिए उपलब्ध नहीं रखा है, लेकिन इसके बावजूद ऑस्ट्रेलियाई टीम मैनेजमेंट उन्हें 2027 के वनडे वर्ल्ड कप में नंबर-7 पर एक बेहतरीन फिनिशर के रूप में देख रहा है। सिंगापुर क्रिकेट से ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट में कदम रखने वाले टिम डेविड का टी20 इंटरनेशनल में रिकॉर्ड बेहद खतरनाक है, लेकिन वनडे में उन्हें ज्यादा मौके नहीं मिले हैं। डेविड ने ऑस्ट्रेलिया के लिए 57 टी20 मैच खेले हैं, जिसमें 174.00 के तूफानी स्ट्राइक रेट और 30.70 की औसत से 1,044 रन बनाए हैं। उन्होंने 2023 वर्ल्ड कप से पहले सिर्फ 4 वनडे मैच खेले थे, जिसमें वे केवल 45 रन ही बना सके। दुनिया भर की टी20 लीग्स में अपनी धाक जमाने वाले टिम डेविड इस समय आईपीएल 2026 में डिफेंडिंग चैंपियन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की तरफ से खेल रहे हैं और शानदार फॉर्म में हैं। इस सीजन में टिम डेविड ने अब तक 13 पारियों में 39.57 की बेहतरीन औसत और 197 की स्ट्राइक रेट से 277 रन कूटे हैं, जिसमें एक अर्धशतक और नाबाद 70 रन उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर रहा है।

F1 चैंपियनशिप पर किमी एंटोनेली का शिकंजा, कनाडा ग्रां प्री जीतकर 43 अंकों की बढ़त बनाई

एजेंसी नई दिल्ली

कनाडा ग्रां प्री 2026 इस बार काफी रोमांच और ड्रामे से भरी रही। मॉन्ट्रियल के सर्किट जिल विलेन्यूव में हुई इस रेस में मर्सिडीज के युवा ड्राईवर किमी एंटोनेली ने शानदार प्रदर्शन करते हुए लगातार चौथी जीत अपने नाम कर ली हैं। बता दें कि इस जीत के साथ एंटोनेली ने चैंपियनशिप में अपनी बढ़त भी मजबूत कर ली हैं और अब वह 43 अंकों से आगे चल रहे हैं। रेस की शुरुआत से ही मर्सिडीज के दोनों ड्राईवर जॉर्ज रसेल और किमी एंटोनेली के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिली हैं। दोनों कई बार एक-दूसरे से आगे निकले और रेस काफी रोमांचक हो गई थीं। हालांकि यह मुकाबला ज्यादा देर तक नहीं चल सका क्योंकि 30वें लैप में जॉर्ज रसेल की कार में पावर यूनिट से जुड़ी तकनीकी खराबी आ गई और उन्हें रेस बीच में छोड़नी पड़ी हैं। गौरतलब है कि रसेल के बाहर होते ही वर्चुअल सेफ्टी कार लागू करनी पड़ी थीं। इस दौरान ज्यादातर टीमों ने अपने ड्राइवरों को पिट स्टॉप के लिए बुलाया, लेकिन किमी एंटोनेली ने बढ़त बनाए रखी और इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। इटली के युवा ड्राईवर एंटोनेली ने शानदार नियंत्रण और

तेज रफ्तार के साथ रेस खत्म की और दूसरे स्थान पर रहे लुईस हैमिल्टन से लगभग 10 सेकंड आगे रहे हैं। फेरारी के लिए खेल रहे सात बार के विश्व चैंपियन लुईस हैमिल्टन ने अंतिम लैप्स में मैक्स वर्स्टापेन को पीछे छोड़ते हुए दूसरा स्थान हासिल किया। वहीं रेड बुल के मैक्स वर्स्टापेन तीसरे स्थान पर रहे और इस सीजन का अपना पहला पोडियम हासिल किया। मौजूद जानकारी के अनुसार फेरारी के चार्ल्स लेक्लेर चौथे और रेड बुल के इसाक हदजार पांचवें स्थान पर रहे। अल्पाइन के फ्रैंको कोलापिंटो ने लगातार दूसरी बार अंक हासिल करते हुए छठा स्थान प्राप्त किया। वहीं लियाम लॉसन सातवें और पियरे गैस्ली आठवें स्थान पर रहे। रेस में कई बड़े हादसे और तकनीकी समस्याएं भी देखने को मिली। मैकलारेन टीम के लिए यह दिन बेहद खराब साबित हुआ। लैंडो नॉरिस गियरबॉक्स खराबी के कारण रेस पूरी नहीं कर सके, जबकि ऑस्कर पियास्त्री को टक्कर के मामले में 10 सेकंड की पेनाल्टी मिली थीं। पियास्त्री 11वें स्थान पर रहे और टीम कोई अंक हासिल नहीं कर सकी। इसके अलावा फर्नांडो अलोंसो सीट से जुड़ी तकनीकी समस्या के कारण बाहर हो गए, जबकि सर्जियो पेरेज की कार में सस्पेंशन फेल होने से उन्हें भी रेस छोड़नी पड़ी। विलियम्स के एलेक्स एल्बन भी दुर्घटना के बाद रेस से बाहर हो गए। रेस के बाद किमी एंटोनेली ने कहा कि जॉर्ज रसेल के साथ मुकाबला काफी मजेदार और चुनौतीपूर्ण था। उन्होंने माना कि तेज हवा और बदलते मौसम के बीच कार संभालना आसान नहीं था, लेकिन टीम ने शानदार काम किया। बता दें कि अब फॉर्मूला वन 2026 का अगला मुकाबला मोनाको ग्रां प्री होगा, जो 5 से 7 जून के बीच आयोजित किया जाएगा। फैंस की नजरें अब इस बात पर रहेंगी कि क्या किमी एंटोनेली अपनी जीत का सिलसिला आगे भी जारी रख पाते।

वियतनाम में भारतीय पहलवानों का जलवा, 3 Gold समेत 8 पदकों पर किया कब्जा

एजेंसी नई दिल्ली

भारत का अंडर-23 एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप में रविवार को शानदार प्रदर्शन जारी रहा जिसमें दूसरे दिन मानसी लाठेर, काजल और सुमित ने स्वर्ण पदक जीतकर दबदबा कायम रखा। मानसी ने 68 किग्रा स्वर्ण पदक मुकाबले में जबरदस्त प्रदर्शन किया और उज्बेकिस्तान की फिरूजा एसेनबाएवा को 14-1 से करारी शिकस्त दी। काजल का 76 किग्रा फाइनल में प्रदर्शन भी शानदार रहा। उन्होंने किर्गिस्तान की आइझारकिन झानीबेकोवा को 10-0 से हराया। वहीं ग्रीको-रोमन पहलवान सुमित ने 63 किग्रा वर्ग का खिताब जीता। उन्होंने उज्बेकिस्तान के ओजोदबेक खलीलबोएव को 12-2 से हराया। इन तीन स्वर्ण पदक के अलावा भारतीय दल ने दो रजत और तीन कांस्य पदक भी जीते। स्वीटी को वियतनाम की न्गोक एल से 5-7 से हार मिली और उन्हें

रजत पदक से संतोष करना पड़ा। नेहा ने भी 59 किग्रा वर्ग फाइनल में जोरदार संघर्ष किया, लेकिन उज्बेकिस्तान की लायलोखोन सोबिरोवा से 5-9 से हार गईं। इसके साथ ही भारत को दिन का दूसरा रजत पदक मिला। इस बीच अहिल्या एस शिंदे ने कांस्य पदक के प्लेऑफ मुकाबले में शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने किर्गिस्तान की अरुके कादिरबेक किजी को 13-2 से करारी शिकस्त दी। ग्रीको-रोमन वर्ग में नीरज पटेल ने 55 किग्रा वर्ग के मुकाबले में बेहतरीन तकनीक का प्रदर्शन किया। उन्होंने कजाकिस्तान के रऊआन बेकिमोव को 8-0 से हराकर आसानी से कांस्य पदक अपने नाम किया। पदकों की संख्या में इजाफ़ा करते हुए रोहित बुरा ने 87 किग्रा वर्ग के कांस्य पदक मुकाबले में जबरदस्त प्रदर्शन किया। उन्होंने किर्गिस्तान के आर्टिकबेक अलीमबेक उलू को 9-0 से हराकर पोडियम पर जगह बनाई।

फीफा विश्व कप स्पेन टीम में बार्सिलोना-एटलेटिको का दबदबा, मैड्रिड को नहीं मिली जगह

एजेंसी नई दिल्ली

स्पेन ने फीफा विश्व कप 2026 के लिए 26 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी है। हालांकि, टूर्नामेंट में भाग लेने के अपने 92 वर्षों के इतिहास में पहली बार, रियल मैड्रिड का कोई भी खिलाड़ी इस टीम में शामिल नहीं है। मैड्रिड, जो दुनिया का (और सिर्फ स्पेन का ही नहीं) सबसे सफल क्लब है, ने 2025-26 सीज़न बिना किसी बड़ी ट्रॉफी के समाप्त किया। 21 वर्षीय डिफेंडर डीन हुइजसेन के पास अमेरिका जाने वाली टीम में जगह बनाने का सबसे अच्छा मौका था, लेकिन लुइस डे ला फुएंते द्वारा पाउ कुबार्सी, आयमेरिक लापोर्टे और एरिक गार्सिया को प्राथमिकता दिए जाने के कारण उन्हें मौका नहीं मिला। इस बीच, मेरिनो ने रविवार (24 मई) को क्रिस्टल पैलेस के खिलाफ इस सीज़न के अपने आखिरी प्रीमियर लीग मैच में आर्सेनल के लिए वापसी की। पैर में फ्रैक्चर होने के बाद जनवरी के बाद यह उनकी पहली उपस्थिति थी। कोच डी ला फुएंते ने बार्सिलोना और एटलेटिको मैड्रिड से क्रमशः एरिक गार्सिया और मार्क प्यूबिल को भी वापस बुलाया है, जबकि एटलेटिको के रॉबिन ले नॉर्मंड को नजरअंदाज कर दिया है। बार्सिलोना के युवा स्टार यामल के साथ-साथ एथलेटिक बिलबाओ के निको विलियम्स ने स्पेन को यूरो 2024 जिताने में अहम भूमिका निभाई थी। फिटनेस संबंधी समस्याओं से बुरी तरह प्रभावित होने के बावजूद, विलियम्स टीम में बने हुए हैं। 18 वर्षीय यामल, बार्सिलोना के साथ खेलते हुए हैमस्ट्रिंग की चोट से जूझ रहे हैं और अप्रैल के अंत से ही बाहर हैं। इसलिए टूर्नामेंट के शुरुआती मैचों में उनके खेलने पर संदेह है। स्पेन को ग्रुप 'एच' में रखा गया है, जिसमें नवोदित खिलाड़ी केप वर्डे, सऊदी अरब और पूर्व विजेता उरुग्वे शामिल हैं। स्पेन 15 जून को केप वर्डे के खिलाफ अपना अभियान शुरू करेगा, छह दिन बाद (21 जून) सऊदी अरब से भिड़ेगा और 28 जून को उरुग्वे के खिलाफ अपने ग्रुप चरण के अभियान का समापन करेगा। रियल मैड्रिड के पूर्व कप्तान डैनी कार्वाजल, जो इस साल क्लब छोड़ देंगे, अगर चोटों से जूझते हुए उनके आखिरी कुछ सीज़न खराब न हुए होते, तो वे एक मजबूत दावेदार हो सकते थे। स्पेन ने 2020 यूरोपीय चैंपियनशिप (यूरो) में मैड्रिड के किसी भी खिलाड़ी को नहीं भेजा, लेकिन उनमें से तीन खिलाड़ी यूरो 2024 जीतने वाली टीम का हिस्सा थेः कार्वाजल, डिफेंडर नाचो और स्ट्राइकर जोसेलु। नाचो और जोसेलु प्रतियोगिता के बाद क्लब छोड़ चुके हैं।

स्पेन की फीफा विश्व कप 2026 टीम

गोलकीपरः उनाई सिमोन, डेविड राया, जोन गार्सिया

प्रतिरक्षकः मार्क कुकुरेला, एलेजांद्रो ग्रिमाल्डो, पाउ कुबार्सी, आयमेरिक लापोर्टे, मार्क पबिल, एरिक गार्सिया, मार्कोस लोरेंटे, पेड्रो पोरो

मिडफील्डरः पेड्रि, फैबियान रुइज़, मार्टिन जुबिमेंडी, गेवी, रोड्रिगो हर्नांडेज़, एलेक्स बेना, मिकेल मेरिनो, मिकेल ओयारज़ाबल

फॉरवर्डः दानी ओल्मो, निको विलियम्स, येरेमी पिनो, फेरान टोरेस, बोर्जा इग्लेसियस, विक्टर मुनोज़, लैमिन यमल

व्यापार

सरकार ने एलपीजी को लेकर बदले नियम, पीएनजी कनेक्शन लेने वालों को सहूलियत

एजेंसी नई दिल्ली

सरकार ने एलपीजी कंट्रोल ऑर्डर में बदलाव को अधिसूचित किया है। इससे पीएनजी कनेक्शन लेने वाले उपभोक्ताओं को सुविधा मिलेगी। केंद्र सरकार ने सोमवार (25 मई, 2026) को 'लिक्विफाइड पेट्रोलियम गैस (आपूर्ति और वितरण विनियमन) संशोधन आदेश, 2026' को नोटिफाई किया। इस संशोधन का मकसद उन घरेलू एलपीजी उपभोक्ताओं को अतिरिक्त राहत और सुविधा देना है जो बाद में 'पाइप्ड नेचुरल गैस' (पीएनजी) कनेक्शन हासिल करते हैं। संशोधित प्रावधानों के तहत, जिन एलपीजी उपभोक्ताओं के पास पीएनजी कनेक्शन भी हैं, उनके पास नीचे दिए गए ऑप्शन उपलब्ध होंगेः उपभोक्ता पीएनजी कनेक्शन हासिल करने के 30 दिनों के भीतर अपने एलपीजी कनेक्शन को टर्मिनेट या समाप्त करने के लिए आवेदन कर सकते हैं; या उपभोक्ता भविष्य में किसी गैर-पीएनजी क्षेत्र में अपने एलपीजी कनेक्शन को फिर से शुरू करवाने के लिए

'ट्रांसफर वाउचर' हासिल कर सकते हैं। ऐसे उपभोक्ताओं को होगा बड़ा फायदा यह संशोधन उन उपभोक्ताओं को महत्वपूर्ण राहत और फ्लेक्सिबिलिटी देता है जो बाद में ऐसे क्षेत्रों में ट्रांसफर हो सकते हैं जहां पीएनजी का इंफ्रास्ट्रक्चर शायद उपलब्ध न हो। यह प्रावधान विशेष रूप से उन कर्मचारियों के लिए फायदेमंद है जिनका ट्रांसफर होता रहता है। प्रवासी परिवारों, किराएदारों, छात्रों और ऐसे परिवारों के लिए भी यह फायदेमंद है जो गैर-पीएनजी क्षेत्रों में शिफ्ट हो रहे हैं। इस संशोधन का मुख्य मकसद ग्राहकों के लिए दोनों गैस सेवाओं के बीच के ट्रांजिशन (बदलाव) को स्मूथ और बिना किसी परेशानी के पूरा करना है। सरकार चाहती है कि लोग बिना किसी झंझट के एलपीजी सिलेंडर से पीएनजी (पाइप गैस) पर शिफ्ट हो सकें। पश्चिम एशिया में जारी संकट के बीच एलपीजी सप्लाई में दिक्कत महसूस हुई है। इसी को देखते हुए सरकार ने पीएनजी को प्रमोट करना शुरू किया है।

होर्मुज बंद तो भी खाड़ी के इन देशों से कैसे हो रही तेल और गैस की सप्लाई, 'अंधेरे सफर' की कहानी

एजेंसी नई दिल्ली

मिडिल ईस्ट में जारी संघर्ष से ग्लोबल एनर्जी सप्लाई के रूटों पर दबाव बढ़ा है। इस बीच संयुक्त अरब अमीरात (UAE) और कतर की बड़ी तेल कंपनियां फारस की खाड़ी से अपना तेल और गैस उन देशों तक पहुंचाने के लिए कुछ अलग तरह की शिपिंग स्ट्रेटेजी का सहारा ले रही हैं, जिन्हें ऊर्जा की जरूरत है। ये कहानी 'अंधेरे सफर' की है। यूएई की सरकारी तेल कंपनी एडनॉक (Adnoc) दुनिया के सबसे संवेदनशील समुद्री मार्गों में से एक होर्मुज स्ट्रेट से गुजर रही है। यह वह जगह है जहां क्षेत्रीय तनाव बढ़ने के बीच ईरानी सेना और अमेरिकी नौसेना के गश्ती दल एक-दूसरे के बहुत करीब रहकर काम करते हैं। ब्लूमबर्ग की ओर से बताए गए जहाजों की ट्रैकिंग के डेटा और इस मामले से परिचित लोगों के अनुसार, यूएई की सरकारी ऊर्जा कंपनी ने ' डार्क ट्रांजिट ' पर भरोसा किया है। डार्क ट्रांजिट ऐसी यात्राएं होती हैं जिनमें जहाज होर्मुज स्ट्रेट से गुजरते समय अपने ट्रांसपोंडर बंद कर देते हैं। इससे तेल के टैंकरों को वास्तविक समय (रियल टाइम) में पकड़े जाने से बचने में मदद मिलती है। आसान शब्दों में कहें तो जहाजों का सफर अंधेरे या छिपकर में शुरू हो जाता है। इस स्ट्रेटेजी ने अब तक भू-राजनीतिक जोखिमों के समय भी एक्सपोर्ट को जारी रखने में मदद की

है। एडनॉक को स्ट्रेटेजी का हुआ है फायदा किराए के जहाजों पर निर्भर कई क्षेत्रीय उत्पादकों और कमोडिटी व्यापारियों के उलट एडनॉक ने अपने खुद के बेड़े पर भरोसा किया है। इस बेड़े में Navig8 के जरिए चलाए जाने वाले जहाज भी शामिल हैं। इसमें एडनॉक की शिपिंग और लॉजिस्टिक्स शाखा की मेजोरिटी हिस्सेदारी है। साथ ही वानहुआ केमिकल ग्रुप के साथ उसका ज्वाइंट वेंचर भी है। इस बेड़े में कच्चे तेल के वाहक जहाज, रिफाइंड उत्पादों के टैंकर और गैस ले जाने वाले जहाज शामिल हैं। इससे कंपनी को काम करने में ज्यादा फ्लेक्सिबिलिटी मिलती है। उद्योग के सूत्रों का कहना है कि इस व्यवस्था के चलते एडनॉक जहाजों से माल की आवाजाही को काफी हद तक जारी रख पाई है। वहीं, दूसरों को जहाज मालिकों के जोखिम उठाने की क्षमता से जुड़ी बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। होर्मुज के रास्ते कतर का एक्सपोर्ट भी जारी कतर ने भी होर्मुज के रास्ते अपना निर्यात जारी रखा है। यह इस बात का संकेत है कि खाड़ी क्षेत्र के उत्पादक दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा मार्गों में से एक में बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढाल रहे हैं। जहाजों के डेटा के अनुसार, हाल ही में एक एलएनजी टैंकर 'अल रयान' होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने के बाद मस्कट के उत्तर में देखा गया था। यह चीन की ओर जा रहा था। हालांकि, इस महीने की शुरुआत में कतर की 'रास लफान' सुविधा के पास इसने कुछ समय के लिए अपने सिग्नल भेजना बंद कर दिया था। जैसे-जैसे जहाज 'स्टेल्थ नेविगेशन' (छिपकर चलने) के तरीकों को अपना रहे हैं। इस तरह के बीच-बीच में सिग्लन का गायब होना अब आम बात हो गई है। स्ट्रेटेजी में 'शटल रन' भी शामिल एडनॉक की स्ट्रेटेजी में कम समय वाली 'शटल रन' भी शामिल है। इसमें जहाज माल पहुंचाने के बाद तुरंत वापस लौट आते हैं ताकि वे दोबारा माल भर सकें। इससे जिरकू द्वीप और रुवैस रिफाइनरी कॉम्प्लेक्स जैसे टर्मिनलों से माल की आवाजाही को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाने में मदद मिलती है। बताया जाता है कि जहाजों के बीच माल का आदान-प्रदान (शिप-टू-शिप ट्रांसफर) फुजैरा या सोहर के पास ज्यादा सुरक्षित पानी में या फिर भारत के पश्चिमी तट की ओर जाते समय किया जाता है।

अमेरिका को येस, बाकी के लिए नो, भारत के इस कदम का मतलब

एजेंसी नई दिल्ली

भारत में चीनी निर्यात पर प्रतिबंध कायम हैं। यह और बात है कि अमेरिका को 8,606 टन रॉ चीनी के निर्यात की अनुमति दी गई है। सरकार ने कोटा-आधारित टैरिफ रियायत स्कीम के तहत इसकी मंजूरी दी है। यह खबर ऐसे समय सामने आई है जब अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो भारत के दौरे पर हैं। डीजीएफटी ने इस संबंध में एक नोटिफिकेशन जारी किया है। इसमें उसने कहा, 'टैरिफ रेट कोटा यानी TRQ स्कीम के तहत 1.10.2025 से 30.9.2026 तक अमेरिका को निर्यात की जाने वाली 8606 MTRV (मीट्रिक टन कच्चा मूल्य) रॉ चीनी की मात्रा अधिसूचित कर दी गई है।' आम तौर पर इस साल 30 सितंबर तक चीनी के निर्यात पर रोक लगी हुई है। विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT) ने 13 मई को इसे लेकर अधिसूचना जारी की थी। इसमें चीनी के निर्यात पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाने की बात कही गई थी। इस कदम मकसद देश में चीनी की उपलब्धता बढ़ाना और कीमतों को काबू में रखना है। विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT) ने 13 मई को जारी अधिसूचना में कहा था, 'चीनी (कच्ची चीनी, सफेद चीनी और रिफाइंड चीनी) की निर्यात नीति में तत्काल प्रभाव से बदलाव किया गया है। इसे 'प्रतिबंधित' श्रेणी से बदलकर 30 सितंबर, 2026 तक या अगले आदेश तक (जो भी पहले हो) के लिए 'निषिद्ध' श्रेणी में डाल दिया गया है।' इससे पहले, इसका निर्यात 'प्रतिबंधित' श्रेणी में आता था। इसके तहत बाहर भेजे जाने वाले माल के लिए लाइसेंस लेना जरूरी होता था। हालांकि, यह आदेश यूरोपीय संघ (ईयू) और अमेरिका को सीएक्सएल और टैरिफ रेट कोटा (TRQ) व्यवस्था के तहत निर्यात की जा रही चीनी पर लागू नहीं होता है। इन व्यवस्थाओं के तहत निर्यातकों को इन जगहों पर चीनी की तय मात्रा भेजने की अनुमति होती है। इस पर कस्टम ड्यूटी या तो बहुत कम लगती है या बिल्कुल नहीं लगती। डीजीएफटी का यह आदेश 'एडवांस ऑथराइजेशन स्कीम' के तहत भेजे जाने वाले माल, सरकार-से-सरकार (G2G) निर्यात और ऐसे माल पर भी लागू नहीं होता, जो पहले से ही निर्यात के लिए तैयार होकर पाइपलाइन में हैं।

हरिद्वार से काशी तक आस्था की डुबकी, जानें क्यों है ये दिन इतना पावन

राजा भगीरथ ने अपने पुरखों को मुक्ति प्रदान करने के लिए भगवान शिव की आराधना करके गंगा जी को स्वर्ग से उतारा था। जिस दिन वे गंगा को इस धरती पर लाए, वही दिन गंगा दशहरा के नाम से जाना जाता है। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को हस्त नक्षत्र में स्वर्ग से गंगा का आगमन हुआ था। अतः इस दिन गंगा आदि का स्नान, अन्न वस्त्र आदि का दान, जप तप, उपासना और उपवास किया जाता है। इससे पापों से छुटकारा मिलता है। इस दिन गंगा पूजन का विशेष महत्व है। महर्षि व्यास ने गंगा की महिमा के बारे में पद्म पुराण में लिखा है कि अविलंब सद्गति का उपाय सोचने वाले सभी स्त्रीपुरुषों के लिए गंगा ही ऐसा तीर्थ है, जिनके दर्शन भर से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। भविष्य पुराण में लिखा हुआ है कि जो मनुष्य इस दिन गंगा के पानी में खड़ा होकर दस बार गंगा स्तोत्र को पढ़ता है चाहे वो दरिद्र हो, चाहे असमर्थ हो वह भी गंगा की पूजा कर वांछित फल को पाता है। इस पर्व पर मंदिरों को विशेष रूप से सजाया जाता है खासकर गंगा किनारे के मंदिरों की सजावट इस दिन देखते ही बनती है। लाखों की संख्या में श्रद्धालु गंगा में डुबकी लगाते हैं और पवित्र नदी का पूजन करते हैं। इस पर्व की छटा उत्तर भारत में विशेष रूप से संपूर्ण उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार में अलग ही रूप में देखने को मिलती है। यहां गंगा अवसर के दिन मेले का आयोजन भी किया जाता है।

पूजन विधि गंगाजी की पूजा करने के लिए मंत्र इस प्रकार है 'ओम नमो भगवति हिलि हिलि मिलि मिलि गंगे मां पावय पावय स्वाहा'। इसका अर्थ है, हे भगवति गंगे! मुझे बारबार मिल, पवित्र कर, पवित्र कर। इस मंत्र के पठन के साथ पुष्प, दुग्ध, घी, शहद, मिष्ठान, वस्त्र इत्यादि से मां गंगा का पूजन किया जाना चाहिए तथा दान दक्षिणा दी जानी चाहिए। मां गंगा के पूजन के दौरान कोई संकल्प लेकर दस बार डुबकी लगानी चाहिए उसके बाद साफ वस्त्र पहन कर घी से चुपड़े हुए दस मुट्ठी काले तिल हाथ में लेकर जल में डाल दें। इसके बाद गंगाजी की प्रतिमा का पूजन नीचे लिखे मंत्र के साथ करें
नमो भगवत्यै दशपापहरायै गंगायै नारायण्यै रेवत्यै।
शिवायै अमृतायै विश्वरूपिण्यै नन्दिन्यै ते नमो नमः।।

तत्पश्चात् भगवान नारायण, शिव, ब्रह्मा, सूर्य, राजा भगीरथ व हिमालय को वहां उपस्थित मानकर उनका भी पूजन करना चाहिए। इस दिन सोने अथवा चांदी के मछली, कछुए और मेंढ़क बनाकर उनकी पूजा कर नदी में डालने की भी विधान है। अगर सोनेचांदी के नहीं बनवा पाएं तो आटे के भी बनाए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त दस सेर तिल, दस सेर जौ और दस सेर गेहूं दस ब्राह्मणों को दान दें। इस दिन पुण्य सलिला गंगा का जन्मदिन मनाया जाता है। गंगा को पृथ्वी पर लाने की योजना महाराजा सगर ने बनाई थी। महाराजा सगर के साठ हजार पुत्रों ने मिलकर अपने श्रम को सफल बनाया था।

गंगा दशहर व्रत कथा एक बार महाराज सगर ने बड़ा व्यापक यज्ञ किया। उस यज्ञ की रक्षा का भार उनके पौत्र अंशुमान ने संभाला, पर इन्द्र ने सगर के यज्ञीय अश्व का अपहरण कर लिया। यह यज्ञ के लिए विघ्न था। परिणामतः अंशुमान ने सगर की साठ हजार प्रजा लेकर अश्व को खोजना शुरू कर दिया। सारा भूमंडल छान मारा, पर अश्व नहीं मिला। फिर अश्व को पाताल लोक में खोजने के लिए पृथ्वी को खोदा गया। खोदने पर उन्होंने देखा कि साक्षात भगवान महर्षि कपिल के रूप में तपस्या कर रहे हैं। उन्हीं के पास महाराज सगर का अश्व घास चर रहा है। प्रजा उन्हें देखकर चोर चोर कहने लगी। महर्षि कपिल की समाधि टूट गई। ज्यों ही महर्षि ने अपने आग्नेय नेत्र खोले, त्यों ही सारी प्रजा भस्म हो गयी। इन मृत लोगों के उद्धार के लिए ही महाराज दिलीप के पुत्र भगीरथ ने कठोर तप किया था। उस तप से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उनसे वर मांगने को कहा तो भगीरथ ने गंगा की मांग की। इस पर ब्रह्मा ने पूछा राजन! तुम गंगा का पृथ्वी पर अवतरण तो चाहते हो परन्तु क्या तुमने पृथ्वी से पूछा है कि वह गंगा के भार तथा वेग को संभाल लेगी? मेरा विचार है कि गंगा के वेग को संभालने की शक्ति केवल भगवान शंकर में है। इसलिए उचित यह होगा कि गंगा का भार एवं वेग संभालने के लिए भगवान शंकर का अनुग्रह प्राप्त कर लिया जाए। महाराज भगीरथ ने वैसा ही किया। उनकी कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने गंगा की धारा को अपने कमण्डल से छोड़ा। तब भगवान शिव ने गंगा की धारा को अपनी जटाओं में समेटकर जटाएं बांध लीं। इसका परिणाम यह हुआ कि गंगा को जटाओं से बाहर निकलने का पथ नहीं मिल सका। अब महाराज भगीरथ को और भी अधिक चिंता हुई। उन्होंने एक बार फिर भगवान शिव की आराधना में घोर तप शुरू किया। तब कहीं भगवान शिव ने गंगा की धारा को मुक्त करने का वरदान दिया। इस प्रकार शिवाजी की जटाओं से छूटकर गंगाजी हिमालय की घाटियों में कल कल निनाद करके मैदान की ओर मुड़ीं। इस प्रकार भगीरथ पृथ्वी पर गंगावतरण करके बड़े भाग्यशाली हुए। उन्होंने जनमानस को अपने पुण्य से उपकृत कर दिया। युगों युगों तक बहने वाली गंगा की धारा महाराज भगीरथ के कष्टमयी साधना की गाथा कहती है। गंगा प्राणीमात्र को जीवनदान ही नहीं देतीं, मुक्ति भी देती हैं। इसी कारण भारत तथा विदेशों तक में गंगा की महिमा गाई जाती है।

छठी उंगली सिर्फ लकी चर्म नहीं, कूटनीति से जानें ऐसे लोगों की सीक्रेट पर्सनालिटी

वैसे तो भविष्य बताने की तमाम विधियां हैं। सिद्ध पुरुष व्यक्ति के हाव-भाव, चेहरे को देखकर और चाल-चलन की गतिविधियों के बारे में सटीक आकलन कर देते हैं। सामुद्रिक शास्त्र में शारीरिक लक्षणों के बारे में व्यक्ति के व्यक्तित्व से जुड़े अनेक रहस्यों के बारे में बताया गया है। सामान्य तौर पर हर व्यक्ति के हाथ में पांच उंगलियां अंगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठिका होती है।

वहीं कुछ लोगों के हाथ में प्राकृतिक रूप से छठी यानी एक्स्ट्रा उंगली भी देखी जाती है। हालांकि शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के मुताबिक करीब 1 लाख व्यक्तियों में से 50 व्यक्ति ऐसे पैदा होते हैं, जिनके हाथ में या फिर पैर में एक्स्ट्रा उंगली होती है।

सौभाग्य का सूचक प्राचीन मतानुसार हाथ में मौजूद छठी उंगली को सौभाग्य का सूचक माना जाता है। लेकिन आधुनिक हस्तरेखा शास्त्र की बात करें, तो छठी उंगली वाले जातक को वशीकरण, जादू-टोना, मोहन-मारण, विद्वेषन, स्तंभन षटकर्म, इन्द्रजाल, शांतिकर्म, तंत्र-मंत्र जैसी अन्य तांत्रिक एवं मायावी विद्याओं में कुशल और पारंगत होने का संकेत देते हैं। हाथ में एक्स्ट्रा छठी उंगली की स्थिति दो तरह से हो सकती है। एक कनिष्ठिका उंगली के बगल में दूसरी अंगुष्ठ के जुड़वा के रूप में होती है।

अगर हाथ में मौजूद अतिरिक्त छठी उंगली कनिष्ठिका की सहोदर होती है, तो ऐसा व्यक्ति दूसरों से ज्यादा चालाक, अनुभवी और कूटनीतिज्ञ बनाती है। ऐसा व्यक्ति जीवन में कभी एक लक्ष्य लेकर नहीं चल पाता है, वह समय-समय पर अपने विचार और निर्णय बदलता रहता है। ऐसे व्यक्ति का अंदरूनी व्यवहार और स्वभाव कोई नहीं जान सकता है।

हाथ की छठी उंगली अगर अंगुष्ठ के सहोदर अंगुष्ठ के रूप में हो, तो ऐसे जातक में विवेक सामान्य से कहीं ज्यादा होता है। लेकिन अपने विवेक का दुरुपयोग करना भी इस छठे अंगुष्ठ रूपी उंगली की विशेषता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण पहली फिल्म से फेमस हुए अभिनेता ऋतिक रोशन हैं।

नौतपा के तपते 9 दिनों में करें ये उपाय, सूर्यदेव होंगे प्रसन्न, लोक-परलोक में पाएंगे सुख

नौतपा 25 मई, सोमवार से शुरू हो चुका है। इस दौरान 9 दिनों तक सूर्य रोहिणी नक्षत्र में रहेंगे। ऐसे में 25 मई से लेकर 2 जून तक गर्मी अपने चरम पर होगी। नौतपा का सीधा संबंध सूर्य के नक्षत्र परिवर्तन से होता है और इस अवधि में सूर्य का प्रभाव अत्यधिक होता है। इसका असर पहले से ही देखने को मिल रहा है। दिल्ली एनसीआर सहित देश के कई हिस्सों में तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। जीव-जंतु हों या मनुष्य हर कोई इस भीषण गर्मी से परेशान है। हालांकि, शास्त्रों में नौतपा के 9 दिनों कुछ उपायों को करना अत्यंत लाभकारी माना गया है। इनके प्रभाव से सूर्यदेव की कृपा प्राप्त होती है और जीवन में सकारात्मक बदलाव देखने को मिलते हैं। आइए पं. राकेश झा से विस्तार से जानें नौतपा के उपाय।

सूर्यदेव को अर्घ्य दें- नौतपा के इन नौ दिनों में सूर्य का प्रभाव अत्यधिक रहता है जिसका असर मनुष्य के जीवन पर भी पड़ता है। ऐसे में सूर्य के प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए नियमित सूर्य को जल अवश्य अर्पित करना चाहिए। इसके लिए जल में थोड़ा सा गुड़ मिलाकर सूर्यदेव को अर्घ्य दें। इस उपाय को करने से जातक के जीवन में सूर्य की अनुकूलता बनी रहती है और आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है।

सत्तू का करें दान- गर्मी के मौसम में सत्तू का दान करना अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है। पुराणों और शास्त्रों में भी सत्तू के दान का महत्व बताया गया है। यह मनुष्य को गर्मी से राहत दिलाने में सहायक होता है। ऐसे में नौतपा के इन नौ दिनों में अपने सामर्थ्य अनुसार सत्तू का दान करने से जातक को कार्यों में आ रही बाधाओं से राहत मिल सकती है। साथ ही, जीवन में सकारात्मकता आती है और सुख-समृद्धि के संयोग बनते हैं।

आदित्य हृदय स्तोत्र का करें पाठ- अगर आप सूर्य की प्रतिकूल दशा का सामना कर रहे हैं, तो नियमित और श्रद्धापूर्वक आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ कर सकते हैं। ऐसा करने से सूर्य की स्थिति मजबूत होती है और मानसिक शांति प्राप्त होती है। इस स्तोत्र का नियमित पाठ करने से जातक को कार्यक्षेत्र में भी उन्नति के नए रास्ते मिलते हैं और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

पादुका करें दान- गरुण पुराण के अनुसार, मृत्यु के बाद यमलोक मार्ग में जीव को अपने कर्मों अनुसार फल भोगने होते हैं। जहां उसे एक साथ 7 सूर्य की जला देने वाली रोशनी का सामना करना पड़ता है। वहां न छाया के लिए पेड़ और न पैरों के लिए पादुका होती है। लेकिन मान्यता है कि अगर मनुष्य नौतपा में पादुका का दान करे तो उसे यमलोक के मार्ग में चलने के लिए पादुका का सुख मिलता है। साथ ही, नौतपा में छाते का दान करना भी शुभ माना गया है।

पिताजी की करें सेवा- ज्योतिषशास्त्र में सूर्य को मान-सम्मान, आत्मविश्वास और पिता का कारक माना गया है। ऐसे में अपने जीवन में सूर्य की अनुकूलता बनाए रखने और नौतपा के प्रभाव से राहत के लिए अपने पिता की सेवा अवश्य करनी चाहिए। साथ ही, नियमित रूप से रोजाना अपने पिता का आशीर्वाद लेकर ही बाहर निकलें। इस उपाय को करने से बिगड़े काम बन सकते हैं। साथ ही, जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त हो सकते हैं।

जल और शरबत का करें दान- नौतपा के इन नौ दिनों में गर्मी अपने चरम पर होती है। ऐसे में इस दौरान जल, शरबत आदि का दान करना अत्यंत पुण्यकारी माना गया है। इसके साथ ही अपने सामर्थ्य अनुसार गाय और पशुओं के लिए भी जल की व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए। इस उपाय को करने से जातक को आर्थिक समस्याओं और बाधाओं से निजात मिल सकती है। साथ ही, संभव हो तो छायादार और फल देने वाले वृक्ष भी लगाने चाहिए और नियमित उनकी सेवा करें।

नौतपा के मंगलवार को करें ये उपाय
इस नौतपा के दौरान दो मंगलवार का संयोग बन रहा है। ऐसे में मंगलवार के दिन भगवान हनुमान और सूर्यदेव को आम भेंट करना चाहिए। इस उपाय को करने से सूर्यदेव के साथ-साथ हनुमानजी की कृपा प्राप्त हो सकती है। साथ ही, आम को प्रसाद के रूप में सभी में बांटना चाहिए। ऐसा करने से जीवन में सकारात्मक बदलाव आ सकते हैं।

बाल गोपाल की करें सेवा- अगर आपके घर में गोपालजी विराजते हैं तो नौतपा के दौरान उनके लिए शीतल बिछावन और पेय की व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए। क्योंकि, इन नौ दिनों में भीषण गर्मी पड़ती है। ऐसे में लड्डू गोपाल को मोर पंख से हवा भी करनी चाहिए। इससे बाल गोपाल प्रसन्न होते हैं और उनकी कृपा भक्तों पर बनी रहती है। जिससे जातक के जीवन में सुख-समृद्धि के संयोग बनते हैं।

आज का राशिफलः मेष और सिंह राशि वालों को करियर में सफलता मिलेगी, जानिए मेष से मीन तक का राशिफल

मेष राशि आज का दिन आपके लिए काफी खास रहने वाला है। सूर्यदेव और बुधदेव आज आपके दूसरे घर में विराजमान हैं। उनकी इस उपस्थिति से धन के मामलों में आपकी समझ पूरी तरह क्लियर रहेगी। व्यापार से जुड़े लोगों को नेटवर्किंग के जरिए कुछ जरूरी काम की जानकारियां मिल सकती हैं। ध्यान रहे, अटका हुआ धन आज थोड़ा धीरे-धीरे मिलने वाला है। आज बेवजह की खरीदारी या भावनाओं में बहकर पैसा खर्च करने से बचें।

वृषभ राशि आज आप व्यावहारिक तरीके से चीजों को सोचेंगे। विशेष रूप से बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव आज आपके दूसरे घर में गोचर कर रहे हैं। ग्रहों की यह शुभ स्थिति आपकी आर्थिक उन्नति में बड़ा सहयोग दे सकती है। आज आप अपने भविष्य की स्थिरता को लेकर काफी गंभीर दिखाई देंगे। जो लोग बिजनेस में हैं, उन्हें लोगों से जुड़ने और नेटवर्किंग बढ़ाने से शानदार मौके मिल सकते हैं। सुख-सुविधाओं की चीजों पर जरूरत से ज्यादा पैसा खर्च करने से बचें।

मिथुन राशि आज के दिन आप अपने संपर्कों को बेहतर बनाने और नेटवर्किंग बढ़ाने पर खास ध्यान देंगे। आर्थिक दृष्टिकोण से आज आपका दिन सामान्य और स्थिर बना रहेगा। ग्यारहवें भाव में बैठे मंगलदेव आपको टीम वर्क और लंबी अवधि की योजनाओं के माध्यम से लाभ दिला सकते हैं। आपकी ही राशि में मौजूद बृहस्पतिदेव आज धन से जुड़े सही फैसले लेने में आपका मार्गदर्शन करेंगे। हालांकि, सूर्यदेव और बुधदेव आज आपके बारहवें भाव में हैं, जिससे आपके छिपे हुए खर्चे थोड़े बढ़ सकते हैं।

कर्क राशि आज आपको अपना मानसिक संतुलन बनाए रखने पर विशेष ध्यान देना होगा और बहुत ही शांत रहकर वित्तीय फैसले लेने होंगे। वैसे आज आपके आर्थिक मामले पूरी तरह से संतुलित बने रहने की उम्मीद है। ग्यारहवें भाव में सूर्यदेव और बुधदेव की युति आपके व्यावसायिक संपर्कों के माध्यम से अच्छे लाभ का संकेत दे रही है। आपको आने वाले समय में कमाई के नए स्रोतों की जानकारी भी मिल सकती है। ध्यान रखें, बारहवें घर में बैठे बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव आपके खर्चों में बढ़ोतरी कर सकते हैं।

सिंह राशि आज का दिन आपके लिए बेहद खास रहने वाला है क्योंकि आज आप भरपूर आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे। दूसरे भाव में बैठे चंद्रदेव आज आपका पूरा ध्यान पैसों के सही प्रबंधन और प्लानिंग पर केंद्रित करेंगे। ग्यारहवें भाव में बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव की मौजूदगी आपके बिजनेस और नेटवर्किंग के लिए वरदान साबित हो सकती है। आज नए लोगों से मिलने-जुने से आपको कमाई के कुछ बेहतरीन मौके मिलने की संभावना है। आठवें भाव में शनिदेव बैठे हैं, इसलिए किसी भी तरह के जोखिम भरे निवेश से पूरी तरह दूर रहें।

कन्या राशि आज आप किसी भी काम को लेकर जल्दबाजी नहीं करेंगे, बल्कि बहुत प्रैक्टिकल तरीके से सोचेंगे। वित्तीय मामलों में आज आपके सितारे अनुकूल और स्थिर बने हुए हैं। बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव आपके दसवें भाव में गोचर कर रहे हैं, जो आपकी व्यावसायिक कोशिशों को धन लाभ में बदल सकते हैं। आज आपको अपने पुराने संपर्कों के जरिए कुछ अच्छे आर्थिक अवसर मिल सकते हैं। ध्यान रहे, मंगलदेव आपके आठवें घर में हैं, इसलिए शॉर्टकट या रिस्की इन्वेस्टमेंट से बिल्कुल बचें।

तुला राशि आज के दिन आप अपना संपर्क बेहतर बनाने पर जोर देंगे, जिससे आपको आगे चलकर बड़े लाभ होंगे। वैसे आज आपको अपने धन से जुड़े मामलों में थोड़ी सावधानी और योजना बनाकर चलने की जरूरत है। सूर्यदेव और बुधदेव आपके आठवें भाव में बैठे हैं, जिससे आपके लिए धन की स्थिति स्पष्ट रहने वाली है कि कहां खर्च करना है और कहां बचाना है। आज कोई भी बड़ा या जोखिम भरा आर्थिक फैसला लेने से आपको बचना चाहिए।

वृश्चिक राशि आज आपको अपना मानसिक संतुलन बनाए रखने पर विशेष ध्यान देना होगा ताकि तनाव से मुक्त रहकर आर्थिक योजनाएं बना सकें। सही और सूझबूझ भरी प्लानिंग की मदद से आज आपके आर्थिक हालात काफी मजबूत रहेंगे। ग्यारहवें भाव में बैठे चंद्रदेव आपको अपनी टीम और बिजनेस एक्टिविटीज के जरिए धन लाभ कमाने के अच्छे मौके देंगे। आठवें भाव में बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव का गोचर आपकी लॉन्ग-टर्म सेविंग्स की तरफ ध्यान बढ़ाएगा।

धनु राशि आज का दिन आपके लिए सचमुच बहुत खास रहने वाला है। ग्रहों के प्रभाव से आज आपके अंदर गजब का आत्मविश्वास रहेगा। सूर्यदेव और बुधदेव आपके छठे घर में गोचर कर रहे हैं, जिससे पैसों से जुड़ी आपकी स्थिति बिल्कुल साफ रहने वाली है। आज कामकाज के सिलसिले में बातचीत करते हुए आपको कुछ ऐसे ऑफर मिल सकते हैं, जो भविष्य में बड़ा फायदा दिलाएंगे। आज किसी भी अनजान जगह पर पैसा लगाने का जोखिम बिल्कुल न लें।

मकर राशि आज आप किसी भी वित्तीय काम को लेकर ज्यादा उत्साहित में नहीं रहेंगे, बल्कि बहुत ही प्रैक्टिकल होकर आगे बढ़ेंगे। राहु आपके दूसरे घर में बैठे हैं, इसलिए आज जल्दबाजी में पैसे खर्च करने से बचें। छठे भाव में बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव साथ बैठें हैं, जिससे आपकी मेहनत और अनुशासित प्रयासों से धन लाभ के योग बन रहे हैं। नेटवर्किंग के जरिए आपको कमाई के कुछ अच्छे मौके मिलने वाले हैं, जिससे आपका बजट सुधरेगा।

कुंभ राशि आज आप अपने कॉन्टेक्ट्स को बेहतर बनाने पर ध्यान देंगे। आपके आर्थिक जीवन को आज एक नई दिशा मिलने वाली है। वैसे आज पैसों के लेन-देन और वित्तीय मामलों में आपको थोड़ी सावधानी बरतें। शनिदेव आपके दूसरे भाव में गोचर कर रहे हैं, इसलिए फिजूलखर्ची पर लगाम लगाएं। हालांकि, चौथे भाव में बैठे सूर्यदेव और बुधदेव की वजह से धन की स्थिति आपके सामने बिल्कुल साफ रहने वाली है।

मीन राशि आप मानसिक संतुलन बनाए रखेंगे। ध्यान रखें कि घबराहट या तनाव में आप कोई गलत आर्थिक फैसला न लें। मंगलदेव आपके दूसरे भाव में बैठें हैं, इसलिए पैसों से जुड़े मामलों में किसी से भी बहस न करें । मन को शांत रखकर सोच-विचार करें। चौथे भाव में बृहस्पतिदेव और शुक्रदेव का गोचर आपके सुख-साधनों के लिए अच्छे योग बना रहा है। पैसों का इस्तेमाल अनुशासित तरीके से करें, इससे आपकी वित्तीय स्थिति बेहतर रहेगी।

गंगा दशहरा पर इस विधि से करें गंगा पूजन, जानें सुख-समृद्धि दिलाने वाले विशेष उपाय

गंगा दशहरा पर गंगा स्नान करते समय दस डुबकी लगाने की परंपरा है। पूजन में दस प्रकार के पुष्प, फल, दीपक, नैवेद्य, पान के पत्ते अर्पण कर पूजा की जाती है। दस ब्राह्मणों को दक्षिणा व भोजन कराना शुभ माना गया है। भविष्य पुराण के अनुसार, जो भक्त इस दिन मां गंगा का ध्यान करते हुए स्नान, पूजन और स्तोत्र पाठ करता है, उसे पुण्य की प्राप्ति होती है, पुण्य के प्राप्त होने से जीवन में रोग, शोक, गरीबी दूर होने लगती है। यदि कोई गंगा तट पर जाकर स्नान करने में असमर्थ है, तो वह अपने घर के निकट किसी नदी या तालाब में गंगा जी का ध्यान करते हुए स्नान कर सकता है। जल में स्नानकर अभयमुद्रायुक्त मकर वाहिनी गंगाजी का ध्यान करें और निम्न मंत्र से आवहनादि षोडशोपचार पूजन करें, ओम् नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै नमः।

गंगा दशहरा पूजा विधि और उपाय इस दिन भागीरथ द्वारा गंगा के अवतरण की कथा सुनना भी विशेष लाभदायक है। घर-परिवार में सुख- समृद्धि के लिए इस बार अधिक मास के अन्तर्गत पड़ने वाले इस अतिविशिष्ट पर्व पर

निष्काम कोई भी पुण्य का कार्य अवश्य करें, जैसे मन्दिर निर्माण में सहयोग, राहगीरों के लिए जलपान की व्यवस्था इत्यादि। पुण्यों के प्रताप से व्यक्ति के कार्यों में आ रही अड़चनें समाप्त होती हैं जिससे सोया हुआ भाग्य जागृत होता है।

ब्रह्मपुराण के अनुसार तीन कायिक, चार वाचिक तथा तीन मानसिक पाप मिलाकर दस तरह के दोषों का निराकरण इस पर्व पर होता है। गंगा के जल में वह समस्त गुण विद्यमान हैं, जो ग्रहों के दुष्प्रभाव को समाप्त करते हैं। गंगा में स्नान कर ध्यान आदि करने से विभिन्न ग्रह दोष, मातृ-पितृ दोष की पीड़ा तो शांत होती ही है, साथ ही किसी रोग से विपत्ति में पड़ा व्यक्ति, सांसारिक चक्र में फंसा व्यक्ति अथवा भय बंधनों से घिरा व्यक्ति भी मुक्त हो जाता है।

गंगा दश-हरा यानि दस पापों का हरण, गंगा दशहरा के शुभ संयोग में मां गंगा दस प्रकार के पाप दोषों का हरण कर लेती हैं, जिससे व्यक्ति के जीवन में शुभता का संचार होता है।

ब्याज के शिकंजे में मजदूर नगरी,मौत की किस्तों में बंटती जिंदगियां

बीसी और अवैध ब्याजखोरी का काला कारोबार बना मौन हत्यारा कर्मचारियों की आत्महत्याओं ने खोली व्यवस्था की पोल

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

सारनी-पाथाखेड़ा क्षेत्र में अवैध सूदखोरी और बीसी के नाम पर चल रहे अनियंत्रित पैसों के कारोबार ने अब सामाजिक संकट का रूप ले लिया है।कभी मजदूरों और नौकरीपेशा लोगों के सपनों को सहारा देने वाला उधार,आज उनकी सांसों पर बोझ बनता जा रहा है।वेस्टर्न कोलफील्ड लिमिटेड और मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी में कार्यरत कर्मचारियों के बीच बढ़ती आत्महत्या और मानसिक प्रताड़ना की घटनाओं ने पूरे क्षेत्र को झकझोर दिया है।क्षेत्र में चर्चा का विषय बने इस सूद सिंडिकेट पर अब प्रतिबंध लगाने की मांग तेज हो गई है।आरोप है कि बीसी और अवैध ब्याजखोरी के जाल में फंसे कई कर्मचारी और ग्रामीण आर्थिक दबाव, सामाजिक अपमान और मानसिक तनाव के कारण मौत को गले लगाने पर मजबूर हो गए।बताया जा रहा है कि अब तक 7 से 8 लोगों की मौत इस अवैध आर्थिक जाल से जुड़ी परिस्थितियों में हो चुकी है, जबकि कई परिवार बर्बादी की कगार पर पहुंच गए हैं। इसी गंभीर मुद्दे को लेकर सारनी के अपर गेस्ट हाउस एबी टाइप में अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार सुरक्षा संगठन की संगठनात्मक एवं क्षेत्रीय बैठक आयोजित की गई।बैठक में पदाधिकारियों ने कहा कि क्षेत्र में चल रहा अवैध ब्याज कारोबार अब केवल आर्थिक लेन-देन नहीं, बल्कि मानसिक शोषण और सामाजिक उत्पीड़न का माध्यम बन चुका है।बैठक में यह भी सामने आया कि कई कर्मचारी आसान

किश्तों और तत्काल रकम के लालच में बीसी और निजी उधारी के जाल में फंस जाते हैं। शुरुआत में मदद जैसा दिखने वाला यह कारोबार बाद में कई गुना ब्याज, प्रताड़ना,धमकी और सामाजिक बेइज्जती में बदल जाता है। वेतन मिलने से पहले ही मजदूरों की तनख्वाह सूद की किस्तों में बंट जाती है और घर की रसोई तक संकट में आ जाती है।अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार सुरक्षा संगठन के जिला अध्यक्ष सतीश बौरासी ने कहा कि संगठन आम लोगों को राहत दिलाने के लिए लगातार संघर्ष करेगा। जिला महामंत्री संतोष कैथवास ने कहा कि ब्याजखोरी के कारण कई लोग आत्महत्या कर चुके हैं तथा कई परिवार आज भी आर्थिक तबाही का दंश झेल रहे हैं।जिला प्रमुख सचिव विनोद कुमार कैथवार ने कहा कि नौकरीपेशा लोगों को योजनाबद्ध तरीके से आर्थिक जाल में फंसाया जा रहा है।वहीं जिला प्रभारी संजय अग्रवाल ने अवैध सूदखोरी को क्षेत्र की सबसे गंभीर सामाजिक समस्या बताते हुए प्रशासन से विशेष अभियान चलाने की मांग की।उन्होंने कहा कि यदि समय रहते कठोर कार्रवाई नहीं हुई तो यह संकट और भयावह रूप ले सकता है।

बैठक में यह भी मांग उठी कि प्रशासन अवैध बीसी और ब्याज कारोबार संचालित करने वालों की जांच कर उनके वित्तीय नेटवर्क को सार्वजनिक करे। साथ ही ऐसे मामलों के लिए विशेष हेल्पलाइन,काउंसलिंग व्यवस्था और कानूनी सहायता केंद्र शुरू किए जाएं,ताकि आर्थिक प्रताड़ना से जूझ रहे लोग आत्महत्या जैसा कदम उठाने से बच सकें।जिला वरिष्ठ संयोजक जय शिंदे ने कहा कि संगठन पूर्व में भी कई बार प्रशासन को ज्ञापन सौंप चुका है, लेकिन जमीनी स्तर पर ठोस कार्रवाई नहीं हो सकी। अब संगठन आम जनता को राहत दिलाने के लिए व्यापक जनआंदोलन की तैयारी कर रहा है।बैठक में बड़ी संख्या में संगठन के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बूंद-बूंद से बचेगा भविष्य महाविद्यालय में गूंजा जल गंगा संवर्धन अभियान का संकल्प

रैली,निबंध और नवाचारों के जरिए विद्यार्थियों ने दिया संदेश जल बचेगा तभी कल सजेगा

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

सोमवार का दिन महाविद्यालय परिसर में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जल संरक्षण एवं पर्यावरण जागरूकता को लेकर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महाविद्यालय प्राचार्य प्रदीप पंद्राम ने विद्यार्थियों को जल के महत्व से अवगत कराते हुए की। उन्होंने कहा कि जल केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं,बल्कि जीवन की आधारशिला है।वर्तमान समय में जल संरक्षण कोई विकल्प नहीं,बल्कि प्रत्येक नागरिक की नैतिक जिम्मेदारी बन चुका है।

भीषण गर्मी और लगातार गिरते जल स्तर पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि वे जल की एक-एक बूंद का महत्व समझें तथा अनावश्यक जल व्यर्थ करने से बचें।साथ ही विद्यार्थियों को अत्यधिक गर्मी में बिना आवश्यकता घर से बाहर न निकलने और प्रतिबंधित क्षेत्रों से दूर रहने की सलाह भी दी गई।कार्यक्रम के अंतर्गत जल संरक्षण का महत्व विषय पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई,जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए वर्षा जल संग्रहण,पारंपरिक जल स्रोतों के संरक्षण, भूजल स्तर सुधार और जल संकट से जुड़े महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान निशा डायरे,द्वितीय स्थान संयुक्त रूप से अंबिका भोरसे एवं रूपलाल भोरसे तथा तृतीय स्थान खुशी साहू ने प्राप्त किया। सभी विजेता विद्यार्थी प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राएं हैं।इसके पश्चात महाविद्यालय परिवार द्वारा जागरूकता रैली निकाली गई। रैली में विद्यार्थियों ने जल है तो कल है।पानी

बचाओ,जीवन बचाओ और जल संरक्षण अपनाना है, धरती को स्वर्ग बनाना है जैसे नारों से वातावरण को जागरूकता के रंग में रंग दिया।अभियान के दौरान जल संरक्षण को व्यवहारिक रूप देने के लिए कई नवाचारों पर भी चर्चा की गई। विद्यार्थियों को घरों में वर्षा जल संचयन प्रणाली लगाने,उपयोग किए गए पानी का पौधों में पुन उपयोग करने,कॉलेज परिसर में एक विद्यार्थी–एक पौधा अभियान चलाने तथा गांवों और मोहल्लों में सूखते कुओं एवं तालाबों के पुनर्जीवन के लिए जनभागीदारी बढ़ाने का संदेश दिया गया। महाविद्यालय स्तर पर जल प्रहरी दल गठित करने का प्रस्ताव भी रखा गया,जो जल संरक्षण संबंधी गतिविधियों की निगरानी और जनजागरण का कार्य करेगा। कार्यक्रम में डॉ.हरीश लोखंडे, डॉ.दसरू यदुवंशी,डॉ. अंजना राठौर,डॉ.अनीता नागले,संगीता उघड़े,शैलेश श्रीवास्तव,मनोज नागले, दिनकर लिखिकर,अनिल तुमडाम,अनुज हलदार सहित महाविद्यालय का समस्त स्टाफ एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पांच वर्षों से लगातार आग बरसा रहा नौतपा,इस बार मई में ही धरती तंदूर और हवा अंगार बनी

नौतपा का पहला प्रहार बैतूल में 44 डिग्री पर उबला आसमान,जंगलों का जिला भी नहीं बचा सूरज की तपिश

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

नौतपा के पहले ही दिन सूर्य देव ने अपने तीखे तेवर दिखा दिए।सोमवार को बैतूल जिले का तापमान 44 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। सुबह से ही आसमान से आग बरसती रही और दोपहर होते-होते सड़कें तवे की तरह तपने लगीं। हालात ऐसे रहे कि लोग जरूरी काम के बिना घरों से बाहर निकलने से बचते नजर आए। सलैया,चोपना बाजारों में दोपहर के समय सन्नाटा पसरा रहा,जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल संकट और बिजली कटौती ने लोगों की परेशानियां और बढ़ा दीं। आमतौर पर बैतूल को मध्यप्रदेश के उन जिलों में गिना जाता है जहां घने जंगल,हरियाली और पहाड़ी क्षेत्र वातावरण

को संतुलित बनाए रखते हैं।जिले में सतपुड़ा की वन संपदा और बड़े भूभाग पर फैले जंगल गर्मी को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं,लेकिन पिछले कुछ वर्षों में मौसम चक्र में आए बदलाव ने प्रकृति के इस संतुलन को भी चुनौती देना शुरू कर दिया है।यदि पिछले पांच वर्षों के नौतपा के आंकड़ों पर नजर डालें तो हर साल तापमान नए रिकॉर्ड छूता दिखाई दिया। वर्ष 2021 में नौतपा के दौरान अधिकतम तापमान लगभग 41 डिग्री तक पहुंचा था। वर्ष 2022 में यह बढ़कर 42 डिग्री के आसपास दर्ज हुआ। वर्ष 2023 और 2024 में तापमान 43 डिग्री के करीब पहुंचा,जबकि इस वर्ष नौतपा के पहले ही दिन पारा 44 डिग्री तक जा पहुंचा है। मौसम विशेषज्ञों का मानना है कि लगातार घटती नमी, कंक्रीट के बढ़ते निर्माण,जल स्रोतों के सिकुड़ने और पर्यावरणीय असंतुलन के कारण गर्मी का असर अधिक तीखा होता जा रहा है।नौतपा को भारतीय ज्योतिष और मौसम विज्ञान दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण माना जाता है। मान्यता है कि इन नौ दिनों की तेज गर्मी ही आने वाले मानसून को मजबूत बनाती है।हालांकि आमजन के लिए यह दौर किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं दिखाई दे रहा। खेतों में काम करने वाले किसान,मजदूर और दिहाड़ी श्रमिक सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं।

स्वास्थ्य विभाग ने भी लोगों को दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक धूप से बचने, पर्याप्त पानी पीने और बच्चों तथा बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखने की सलाह दी है। फिलहाल नौतपा की शुरुआत ने ही यह संकेत दे दिए हैं कि आने वाले दिनों में गर्मी अपने और भी तीखे तेवर दिखा सकती है।

नाबालिक से दुष्कर्म करने वाला आरोपी पुलिस गिरफ्त में,घेराबंदी कर दबोचा गया युवक

सारनी पुलिस की त्वरित कार्रवाई पॉक्सो एक्ट सहित गंभीर धाराओं में मामला दर्ज,न्यायालय में पेश कर भेजा गया जेल

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

नाबालिक बालिका के साथ दुष्कर्म और जान से मारने की धमकी देने के गंभीर मामले में सारनी पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।मामले को संवेदनशील मानते हुए पुलिस ने तत्परता दिखाई और महज कुछ ही समय में आरोपी को घेराबंदी कर दबोचने में सफलता हासिल की।प्राप्त जानकारी के अनुसार 24 मई को पीड़िता पक्ष द्वारा सारनी थाना पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई गई थी कि आरोपी गौतम धुर्वे ने डरा-धमकाकर नाबालिक के साथ कई बार दुष्कर्म किया तथा घटना की जानकारी किसी को देने पर जान से मारने की धमकी दी। शिकायत मिलते ही सारनी पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए आरोपी के खिलाफ अपराध क्रमांक 165/26 के तहत धारा 64(2)(एम), 332(ग), 351(3) बीएनएस एवं 5 एल/6 पॉक्सो एक्ट के अंतर्गत प्रकरण दर्ज कर

विवेचना शुरू की।थाना प्रभारी जयपाल इनवाती ने बताया कि पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन के निर्देशन में महिला एवं बालिका संबंधी अपराधों पर तत्काल और कठोर कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं।अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमल जोशी तथा एसडीओपी प्रियंका करचाम के नेतृत्व में पुलिस टीम ने आरोपी की तलाश शुरू की और घेराबंदी कर उसे गिरफ्तार कर लिया।पुलिस के अनुसार गिरफ्तार आरोपी गौतम पिता जंगलसा धुर्वे उम्र 19 वर्ष निवासी ग्राम बाकुड़ थाना सारनी को सोमवार को न्यायालय में प्रस्तुत किया गया,जहां से उसे न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया।पूरे मामले में कार्रवाई के दौरान थाना प्रभारी जयपाल इनवाती,उप निरीक्षक प्रीति पालेवार तथा आरक्षक वर्षा नागले की महत्वपूर्ण भूमिका रही।पुलिस ने स्पष्ट किया है कि महिला एवं बाल अपराधों में किसी भी आरोपी को बख्शा नहीं जाएगा और ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई लगातार जारी रहेगी।

तवा तट पर गूंजा श्रद्धा का स्वर,गंगा दशहरा पर आस्था के दीपों से जगमगाया सतपुड़ा डेम उज्जैन के शिप्रा तट की परंपरा की झलक सारनी में दिखी,तवा माई को अर्पित हुई चुनरी,भजनों और दीपदान से भक्तिमय हुआ वातावरण

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

जल संरक्षण, संस्कृति और आस्था के संगम का अद्भुत दृश्य सोमवार को सतपुड़ा डेम स्थित छठ पूजा घाट पर देखने को मिला,जब नगर पालिका परिषद सारनी द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत गंगा दशहरा पर्व श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया।तवा नदी के तट पर आयोजित भव्य गंगा आरती में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी और पूरा घाट दीपों की रोशनी तथा भक्ति रस में डूब गया।

मध्यप्रदेश शासन द्वारा विक्रमोत्सव 2026 के अंतर्गत संचालित जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत प्रदेशभर में जल संरक्षण एवं नदियों के प्रति जनजागरण के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।इसी कड़ी में सारनी में आयोजित यह आयोजन उज्जैन के पवित्र शिप्रा तट पर मनाए जाने वाले

प्रसिद्ध गंगा दशहरा महोत्सव की याद दिलाता नजर आया, जहां हर वर्ष हजारों श्रद्धालु माँ शिप्रा और माँ गंगा के प्रति अपनी आस्था प्रकट करते हैं।सारनी में भी श्रद्धा का वही भाव देखने को मिला,जब तवा मैया के चरणों में चुनरी अर्पित कर सुख-समृद्धि और जल संरक्षण का संकल्प लिया गया।कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष किशोर बरदे,उपाध्यक्ष जगदीश पवार,विधायक प्रतिनिधि सुधा चंद्रा,मुख्य नगर पालिका अधिकारी सी.के. मेश्राम सहित जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। शाम 6 बजे से सुरभि जागरण ग्रुप के कलाकारों ने भजनों की सुरमयी प्रस्तुति देकर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। हर-हर गंगे और जय तवा मैया के जयकारों से घाट परिसर देर रात तक गूंजता रहा।रात्रि 8 बजे तक चले धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान तवा नदी किनारे बनाए गए तीन विशेष आरती मंचों पर विधि-विधान से गणेश जी,मठारदेव बाबा, नर्मदा मैया एवं माँ गंगा की आरती की गई।श्रद्धालुओं ने तवा मैया में दीपदान कर जल संरक्षण एवं प्रकृति संवर्धन का संदेश दिया। दीपों की जगमगाहट से पूरा घाट किसी तीर्थ नगरी की तरह आलोकित दिखाई दिया।इस अवसर पर पार्षद भीम बहादुर थापा,संगीता धोटे,प्रवीण सोनी,हरिता पाल,मो.जफर अंसारी, अजाबराव धोटे,आकाश पंद्राम,एल्डरमैन विनय मदने, रमेश पवार,गोलू राजपूत, जगदीश आहूजा,राजकुमार नागले,राहुल कापसे,राजू साहू,अजय साकरे सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरण किया गया।गंगा दशहरा के इस आयोजन ने केवल धार्मिक आस्था को ही नहीं,बल्कि जल स्रोतों के संरक्षण,नदियों के सम्मान और पर्यावरण जागरूकता का भी सशक्त संदेश दिया।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949